इतिहास और नागरिकशास्त्र

छठी कक्षा

। सा विद्या या विमुक्तये ।
१९६७ २०१७
बालभारती
सुवर्णमहोत्सव

स्वीकृति क्रमांक : मराशैसंप्रप/अविवि/शिप्र/२०१५-१६/१६७३ दिनांक ६.४.२०१६

इतिहास और नागरिकशास्त्र

छठी कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

प्रथमावृत्ति : २०१६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११००४.

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

इतिहास विषय समिति :

डॉ. सदानंद मोरे, अध्यक्ष
श्री मोहन शेटे, सदस्य
श्री पांडुरंग बलकवडे, सदस्य
ॲड. विक्रम एडके, सदस्य
डॉ. अभिराम दीक्षित, सदस्य
श्री बापूसाहेब शिंदे, सदस्य
श्री बाळकृष्ण चोपडे, सदस्य
श्री प्रशांत सरूडकर, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

नागरिकशास्त्र विषय समिति :

डॉ. श्रीकांत परांजपे, अध्यक्ष
प्रा. साधना कुलकर्णी, सदस्य
डॉ. मोहन काशीकर, सदस्य
श्री वैजनाथ काळे, सदस्य
श्री मोगल जाधव, सदस्य-सचिव

इतिहास व नागरिकशास्त्र अभ्यास गट :

श्री राहुल प्रभू
श्री संजय वझरेकर
श्री सुभाष राठोड
सौ. सुनीता दळवी
प्रा. शिवानी लिमये
श्री भाऊसाहेब उमाटे
डॉ. नागनाथ येवले
श्री सदानंद डोंगरे
श्री रवींद्र पाटील
श्री विक्रम अडसूळ
सौ. रूपाली गिरकर
सौ. मिनाक्षी उपाध्याय
सौ. कांचन केतकर
सौ. शिवकन्या पटवे
डॉ. अनिल सिंगारे
डॉ. रावसाहेब शेळके
श्री मरीबा चंदनशिवे
श्री संतोष शिंदे
डॉ. सतीश चापले
श्री विशाल कुलकर्णी
श्री शेखर पाटील
श्री संजय मेहता
श्री रामदास ठाकर

संयोजक :

श्री मोगल जाधव : विशेषाधिकारी, इतिहास एवं नागरिकशास्त्र
श्रीमती वर्षा सरोदे : विषय सहायक, इतिहास एवं नागरिकशास्त्र

भाषांतरकार : प्रा. शशि मुरलीधर निघोजकर, श्री हरीश कुमार खत्री
समीक्षक : श्री धन्यकुमार बिराजदार, डॉ. प्रमोद शुक्ल

लेखिका :
डॉ. शुभांगना अत्रे, प्रा. साधना कुलकर्णी

चित्र एवं सजावट :
प्रा. दिलीप कदम, श्री रवींद्र मोकाटे

मानचित्रकार : श्री रविकिरण जाधव

भाषांतर संयोजन : डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी
संयोजन सहायक : सौ. संध्या वि. उपासनी, विषय सहायक हिंदी

निर्मिति :

श्री सच्चितानंद आफळे,
मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रभाकर परब,
निर्मिति अधिकारी
श्री शशांक कणिकदळे,
निर्मिति साहाय्यक

अक्षरांकन :
भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागद :
७० जी.एस.एम. क्रिमवोव

मुद्रणादेश : N/PB/2016-17/Qty,-25000

मुद्रक : SHARP INDUSTRIES, RAIGAD

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी,
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को,

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

'राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप २००५' और **'बालकों का नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम -२००९'** के अनुसार राज्य का **'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम २०१२'** तैयार किया गया है । शासनमान्य इस पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन शालेय वर्ष २०१३-१४ से क्रमश: प्रारंभ हुआ है । इस पाठ्यक्रम के अनुसार तीसरी कक्षा से पाँचवीं कक्षा तक इतिहास और नागरिकशास्त्र विषयों का समावेश 'परिसर अध्ययन भाग-१' और 'परिसर अध्ययन भाग-२' में किया गया है । छठी कक्षा से आगामी पाठ्यक्रम में इतिहास और नागरिकशास्त्र को स्वतंत्र विषयों के रूप में रखा गया है । इसके पूर्व इन विषयों के लिए दो स्वतंत्र पुस्तकें निर्धारित थीं । अब इन दोनों विषयों का समावेश बड़ी आकारवाली एक ही पाठ्यपुस्तक में किया गया है । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें विशेष आनंद का अनुभव हो रहा है ।

अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया बालकेंद्रित हो, स्वयंअध्ययन पर बल दिया जाए, अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया आनंददायी हो जैसे व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है । प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विद्यार्थियों को निश्चित कौन-सी क्षमताएँ प्राप्त करनी चाहिए; यह अध्ययन-अध्यापन करते समय स्पष्ट होना चाहिए । इस हेतु प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में इतिहास और नागरिकशास्त्र विभागों के प्रारंभ में संबंधित विषयों की अपेक्षित क्षमताओं का उल्लेख किया गया है । इन क्षमताओं के संदर्भानुसार पाठ्यपुस्तक में पाठ्यांश सामग्री की प्रस्तुति नवीनतापूर्ण पद्धति से की गई है ।

इतिहास विभाग में 'प्राचीन भारत का इतिहास' का समावेश किया गया है । उद्देश्य यह है कि इसके द्वारा विद्यार्थियों को हमारी संस्कृति और परंपराओं की सर्वांगीण जानकारी प्राप्त हो और सामाजिक एकात्मता के विषय में उनकी अनुभूति में वृद्धि हो । प्राचीन भारत की संपन्नता के मूल में भारत के सुदूर देशों के साथ प्रस्थापित वे व्यापारिक संबंध थे; जो हड़प्पा संस्कृति के कालखंड से चले आ रहे थे । विश्वबंधुत्व और अंतर्राष्ट्रीय सामंजस्य जैसे विचारों के बिना ये व्यापारिक संबंध संभव नहीं हैं; इसपर बल दिया गया है ।

नागरिकशास्त्र विभाग में 'स्थानीय शासन संस्था' की जानकारी प्राप्त करते समय विकास योजनाओं में स्थानीय जनता के सहभाग तथा महिलाओं के सहभाग द्वारा जो परिवर्तन हुए हैं; उन परिवर्तनों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है । हमारे देश का शासन संविधान, कानून और अधिनियमों के अनुसार चलता है; इसे बड़ी सरल भाषा में विद्यार्थियों को बताया गया है । पाठों के बीच-बीच में चौखटों में जानकारी दी गई है । इस जानकारी के कारण विद्यार्थियों का अध्ययन अधिक प्रभावी होगा । शिक्षकों के लिए स्वतंत्र रूप से सूचनाएँ दी गई हैं । अध्यापन कार्य अधिकाधिक कृतिप्रधान होने के लिए उपक्रम दिए गए हैं ।

पाठ्यपुस्तक को अधिक-से-अधिक निर्दोष एवं स्तरीय बनाने की दृष्टि से महाराष्ट्र के सभी भागों से चुने हुए शिक्षकों, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों से पुस्तक की समीक्षा कराई गई है । प्राप्त सूचनाओं तथा सुझावों पर यथोचित विचार करके प्रस्तुत पुस्तक को अंतिम स्वरूप दिया गया है । 'मंडळ' की इतिहास विषय समिति और नागरिकशास्त्र विषय समिति, अध्ययन गुट सदस्यों, लेखकों और चित्रकार के आस्थापूर्वक परिश्रम से यह पुस्तक तैयार हुई है । 'मंडळ' इन सभी का हृदय से आभारी है ।

आशा है कि विद्यार्थी-शिक्षक और अभिभावक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(डॉ.सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

पुणे
दिनांक : ९ मई २०१६, अक्षयतृतीया
भारतीय सौर : १९ वैशाख, १९३८

– शिक्षकों के लिए –

- विद्यार्थियों को प्राचीन भारत का इतिहास विषय पढ़ाने का उद्देश्य यह है कि उन्हें हमारी संस्कृति और परंपराओं की सर्वांगीण जानकारी मिले और उसके द्वारा उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता की अनुभूति में वृद्धि हो । प्राचीन भारत का इतिहास पढ़ाते समय शिक्षक इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर अध्यापन कार्य का नियोजन करें ।

- प्रतिदिन के जीवन में विद्यार्थी कई सामाजिक प्रथाओं और परंपराओं का अनुभव करते रहते हैं और उनसे संबंधित प्रश्न उनके मन में उत्पन्न होते रहते हैं । वे प्रश्न क्या हो सकते हैं; इसका अनुमान शिक्षक अपने अनुभव के आधार पर कर सकते हैं । अतः विद्यार्थी निर्भीकता से वे प्रश्न पूछें; इस दृष्टि से शिक्षक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें ।

- प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन द्वारा हमारी सांस्कृतिक विरासत का बोध उत्पन्न होने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, सिक्कों, प्राचीन स्थापत्यों के नमूनों के बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने के कौन–कौन–से साधन हैं; इस विषय में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें । पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों को उपलब्ध जानकारी के अतिरिक्त अन्य जानकारी इकट्ठा करने हेतु प्रेरित करें ।

- हड़प्पा संस्कृति के समय से ही भारत के सुदूर देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हो चुके थे और यही प्राचीन भारत की समृद्धि का महत्वपूर्ण कारण है; इसे ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का स्वरूप संक्षेप में समझाएँ । इस प्रकार का व्यापार विश्वबंधुता और अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द के बिना संभव नहीं है; यह भी विद्यार्थियों के ध्यान में लाएँ।

- दक्षिण–पूर्व एशिया के इंडोनेशिया और कंबोडिया देशों में आज भी रामायण एवं महाभारत महाकाव्यों को नृत्यनाटिका के रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा बनी हुई है । वहाँ के प्राचीन शिल्पों में इन महाकाव्यों में निहित कथाओं का समावेश किया हुआ दिखाई देता है । इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त कर उसे कक्षा में प्रस्तुत करने हेतु विद्यार्थियों को परियोजनाएँ/उपक्रम दें ।

- नागरिकशास्त्र विषय के अध्यापन कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व हमारे देश की शासन संरचना को स्पष्ट करें। केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय शासन के स्वरूप को संक्षेप में स्पष्ट करें ।

- स्थानीय प्रशासन व्यवस्था के विषय में राज्य सरकार के स्वतंत्र कानून एवं अधिनियम हैं । विद्यार्थियों को उन कानूनों और अधिनियमों की विस्तृत जानकारी देना अपेक्षित नहीं है परंतु हमारे देश की शासन व्यवस्था संविधान और कानून के अनुसार चलती है; यह विद्यार्थियों के मन पर अंकित करें । विद्यार्थियों को इसके लाभों से विभिन्न उदाहरणों द्वारा परिचित कराएँ ।

- तिहत्तरवें और चौहत्तरवें संविधान संशोधन के विषय में किए गए इन संशोधनों द्वारा स्थानीय शासन संस्थाओं का सक्षमीकरण हुआ है । इस बात को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को स्थानीय शासन संस्थाओं में हुए परिवर्तन बताएँ ।

- स्थानीय शासन संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिभाग और उनके प्रतिभाग के फलस्वरूप जो परिवर्तन हुए हैं; उनका सप्रयोजन उल्लेख करें ।

- अंग्रेजों के शासन काल में स्थानीय शासन संस्था को 'स्थानीय स्वराज्य संस्था' कहा जाता था । स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश में हमारा अपना ही शासन है । अत: इसे अब 'स्थानीय शासन संस्था' कहा जाता है ।

प्राचीन भारत का इतिहास

अनुक्रमणिका

पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
१. भारतीय उपमहाद्‌वीप और इतिहास	१
२. इतिहास लेखन के साधन	६
३. हड़प्पा संस्कृति:	१०
४. वैदिक संस्कृति	१५
५. प्राचीन भारत में धार्मिक विचार	२०
६. जनपद और महाजनपद	२६
७. मौर्यकालीन भारत	३०
८. मौर्य साम्राज्योत्तर राज्य	३६
९. दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य	४२
१०. प्राचीन भारत : सांस्कृतिक	४८
११. प्राचीन भारत और विश्व	५४

S.O.I. Note : The following foot notes are applicable : (1) © Government of India, Copyright : 2016. (2) The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher. (3) The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line. (4) The administrative headquarters of Chandigarh, Haryana and Punjab are at Chandigarh. (5) The interstate boundaries amongst Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as interpreted from the "North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. 1971," but have yet to be verified. (6) The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India. (7) The state boundaries between Uttarakhand & Uttar Pradesh, Bihar & Jharkhand and Chattisgarh & Madhya Pradesh have not been verified by the Governments concerned. (8) The spellings of names in this map, have been taken from various sources.

इतिहास विषयक क्षमताएँ : छठी कक्षा

अपेक्षा की जाती है कि छठी कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में नीचे लिखी क्षमताएँ विकसित हों।

अ. क्र.	घटक	क्षमता विवरण
१.	**इतिहास का निर्माण और भौगोलिक विशेषताएँ**	– भौगोलिक विशेषताओं का जनजीवन पर प्रभाव पड़ता है; इसका बोध करना। – इतिहास और भूगोल के बीच सहसंबंध होता है; इसका बोध करना।
२.	**प्राचीन भारत के इतिहास के साधनों का सामान्य परिचय**	– ऐतिहासिक साधनों का निरीक्षण करके उन्हें पहचानना/समझना। – ऐतिहासिक साधनों का संकलन करना। – ऐतिहासिक साधनों का वर्गीकरण करना। – ऐतिहासिक वस्तुओं और वास्तुओं/भवनों का संरक्षण करने का स्वयं प्रयास करना तथा दूसरों को प्रेरित करना।
३.	**हड़प्पा संस्कृति**	– तत्कालीन एवं वर्तमान नगरसंरचना की तुलना करना। – हड़प्पाकालीन गंदे जल के निपटारे(जल निस्सारण) की व्यवस्था परिपूर्ण थी; इसका बोध करना। – हड़प्पाकालीन जनजीवन और व्यापार की जानकारी प्राप्त करना।
४.	**वैदिक संस्कृति**	– वैदिक कालखंड के साहित्य के विषय में जानकारी प्राप्त करना। – वैदिक कालखंड के जनजीवन के विषय में जानकारी प्राप्त करना। – आश्रमव्यवस्था को समझना। – प्राचीन भारतीय स्त्रियों का समाज में स्थान, इस विषय पर विचार-विमर्श करना।
५.	**प्राचीन भारत में धार्मिक विचार**	– सभी धर्मों के प्रति सम्मान का भाव रखना। – सभी धर्मों की सीखों/उपदेशों में समान बिंदु खोजना। – वर्धमान महावीर आणि गौतम बुद्ध की सीखों (उपदेशों) का महत्व समझना। – मानवता और धर्मनिरपेक्षता सर्वश्रेष्ठ विचार हैं; इसका बोध करना।
६.	**जनपद और महाजनपद**	– मानचित्र में जनपदों और महाजनपदों के स्थान दर्शाना। – प्राचीन भारत के जनपदों और महाजनपदों की गणतांत्रिक शासन व्यवस्था का स्वरूप समझना। – शासन व्यवस्था के परिवर्तित स्वरूप को समझना।
७.	**मौर्यकालीन भारत**	– भारत के संबंध यूनान और ईरान से प्रस्थापित होने के कारण उनमें परस्पर आदान-प्रदान प्रारंभ हुआ, इसका बोध करना। – मौर्यकालीन सुव्यवस्थित प्रशासन को समझना। – सम्राट अशोक द्वारा प्रजाहित में किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त करना। – प्राचीन भारतीय कला और साहित्य की जानकारी प्राप्त करना।
८.	**उत्तर के प्राचीन राज्य**	– इस कालखंड के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को समझना। – प्राचीन भारत में आए हुए विदेशी यात्रियों के विषय में जानकारी प्राप्त करना। – प्राचीन भारत की पूर्वोत्तर राजसत्ताओं की जानकारी प्राप्त करना।
९.	**दक्षिण के प्राचीन राज्य**	– इस कालखंड के राजवंशों की जानकारी प्राप्त करना। – इस कालखंड की सांस्कृतिक उन्नति को समझना। – पल्लवों के कालखंड में भारत के दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ सांस्कृतिक संबंध थे; इसका बोध करना।
१०.	**प्राचीन भारत : सांस्कृतिक**	– प्राचीन भारतीय कला और साहित्य की प्रगति के विषय में जानकारी प्राप्त करना। – भारतीयों द्वारा गणित और विज्ञान के क्षेत्र में की गई प्रगति का बोध करना। – इस कालखंड के जनजीवन की जानकारी प्राप्त करना। – इस कालखंड में शिक्षा के क्षेत्र में हुई उन्नति को स्पष्ट करना।
११.	**प्राचीन भारत और विश्व**	– भारतीय संस्कृति और अन्य संस्कृतियों के बीच के आदान-प्रदान को समझना। – वैचारिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा मानव का ज्ञान अधिक समृद्ध हो जाता है; यह बोध करना।

१. भारतीय उपमहाद्वीप और इतिहास

१.१ इतिहास का निर्माण और भौगोलिक विशेषताएँ
१.२ भारत की भौगोलिक विशेषताएँ
१.३ भारतीय उपमहाद्वीप

१.१ इतिहास का निर्माण और भौगोलिक विशेषताएँ :

मानव और उसके आस-पास के परिसर के बीच किस प्रकार घनिष्ठ संबंध होता है; यह हमने पाँचवीं कक्षा में विस्तार से देखा है । आदिमानव के जीवन स्तर एवं तकनीकी विज्ञान में हुए परिवर्तन उसके परिसर में हुए परिवर्तनों से किस प्रकार संबद्ध थे; यह देखा । अश्मयुगीन संस्कृति से लेकर नदी तट की कृषिप्रधान संस्कृति तक की मानवीय संस्कृति की ऐतिहासिक यात्रा किस प्रकार संपन्न हुई; इसका हमने अवलोकन किया ।

मानवीय संस्कृति की यात्रा में घटित सभी प्रकार की भूतकालीन घटनाओं के क्रमबद्ध तथ्यों की प्रस्तुति को इतिहास कहते हैं । स्थान, काल, व्यक्ति और समाज इतिहास के चार प्रमुख आधार स्तंभ अर्थात घटक हैं । इन चार घटकों को छोड़कर इतिहास का लेखन करना संभव नहीं है । इनमें से 'स्थान' घटक का संबंध भूगोल अर्थात भौगोलिक परिस्थिति से संबंधित है । इतिहास और भूगोल के बीच अटूट संबंध है । भौगोलिक परिस्थिति का इतिहास पर अनेक प्रकार से प्रभाव पड़ता है ।

हम जहाँ रहते हैं; उस परिसर की भौगोलिक विशेषताओं पर हमारी खान-पान, वेशभूषा, मकानों की बनावट, व्यवसाय आदि बातें अधिकांश रूप में निर्भर रहती हैं । हमारा सामाजिक जीवन भी इन्हीं विशेषताओं पर निर्भर रहता है । जैसे-पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन मैदानी प्रदेशों में रहने वाले लोगों की तुलना में अधिक परिश्रम से भरा होता है । पर्वतीय क्षेत्रों में खेती की उपजाऊ भूमि बहुत कम उपलब्ध होती है तो मैदानी प्रदेश में उपजाऊ भूमि अधिक मात्रा में पाई जाती है । परिणामस्वरूप पर्वतीय क्षेत्र में खाद्यान्न और साग-सब्जियाँ कम मात्रा में उपलब्ध होती हैं । इनकी तुलना में ये खाद्यान्न मैदानी प्रदेश के लोगों को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं । इसका प्रभाव उनके खान-पान पर भी दिखाई देता है । पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अन्न के लिए शिकार और जंगल में इकट्‌ठे किए गए पदार्थों पर अधिक मात्रा में निर्भर रहना पड़ता है । इस तरह पर्वतीय क्षेत्रों में रहनेवाले और मैदानी प्रदेश में रहनेवाले लोगों की जीवन प्रणाली में अन्य कई बातों में भी अंतर पाया जाता है ।

चलो, विचार-विमर्श करें ।

- तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-से व्यवसाय चलते हैं ?
- तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-सी फसलें उगाई जाती हैं ।

घरों के प्रकार

हम जिस प्रदेश में रहते हैं; उस प्रदेश की जलवायु, वर्षा, खेती की उपज, वनस्पतियाँ और प्राणियों में पाई जाने वाली विविधता आदि बातें हमारे जीने के साधन होती हैं । उन्हीं के आधार पर उस-उस प्रदेश की जीवन प्रणाली और संस्कृति विकसित होती रहती है। जहाँ जीवनयापन के साधन विपुल मात्रा में होते हैं; वहाँ मानवीय समाज दीर्घकाल तक अपनी बस्ती बनाकर रहता है । कालांतर में इन बस्तियों का रूपांतरण ग्रामों और नगरों में हो जाता है । पर्यावरण का ह्रास, अकाल, आक्रमण अथवा अन्य कारणों से जीवन के साधनों का अभाव अनुभव होता है तो लोग गाँव छोड़ जाने को बाध्य हो जाते हैं । गाँव-बस्तियाँ, नगर उजड़ जाते हैं । इतिहास में ऐसी अनेक घटनाओं का घटित होना दिखाई देता है । इससे यह स्पष्ट होता है कि इतिहास और भूगोल के बीच अटूट संबंध होता है ।

१.२ भारत की भौगोलिक विशेषताएँ :

हमारे भारत देश का विस्तार बहुत विशाल है । उसकी उत्तर दिशा में हिमालय, पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम दिशा में अरब सागर और दक्षिण दिशा में हिंद महासागर हैं । भारत के अंदमान-निकोबार एवं लक्षद्वीप को छोड़कर शेष भूप्रदेश भौगोलिक दृष्टि से अखंडित है ।

प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करते समय हमें इस भूप्रदेश को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि इसी भूप्रदेश का उल्लेख हम प्राचीन भारत के रूप में करने वाले हैं । वर्तमान पाकिस्तान और बांग्ला देश ई. स. १९४७ के पूर्व प्राचीन भारत के अंग थे ।

भारतीय इतिहास की विकास प्रक्रिया का विचार करें तो निम्न छह भूप्रदेश महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं ।

१. हिमालय
२. सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों का मैदानी प्रदेश
३. थार का मरुस्थल
४. दक्खन का पठार
५. समुद्री तटों के प्रदेश
६. समुद्र में स्थित द्वीप

हिमालय पर्वत

१. हिमालय: हिंदुकुश और हिमालय पर्वत के रूप में भारतीय उपमहाद्वीप की उत्तर दिशा में मानो एक अभेद्य दीवार खड़ी हुई है । इस दीवार के कारण भारतीय उपमहाद्वीप मध्य एशिया के मरुस्थल से अलग हो गया है परंतु हिमालय पर्वत के खैबर और बोलन दर्रे में से एक व्यापारिक सड़क जाती है । यह सड़क मध्य एशिया से गुजरने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्ग से जोड़ी गई थी । चीन से निकलकर एवं मध्य एशिया होकर अरब प्रदेश तक पहुँचने वाला यह व्यापारिक मार्ग 'रेशम मार्ग' के रूप में जाना जाता था। क्योंकि इस मार्ग द्वारा पश्चिमी देशों में भेजे जानेवाले माल में रेशम प्रमुख वस्तु थी । इन्हीं दर्रों में से आने वाले मार्ग से अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने प्राचीन भारत में प्रवेश किया । अनेक विदेशी यात्री भी इसी मार्ग द्वारा भारत में आए ।

खैबर दर्रा

२. सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियों का मैदानी प्रदेश:

यह मैदानी प्रदेश तीन बड़ी नदियों-सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों की घाटियों से बना है । यह प्रदेश पश्चिम में सिंध-पंजाब से लेकर

गंगा नदी

पूर्व में वर्तमान बांग्ला देश तक फैला हुआ है । इसी प्रदेश में भारत की अति प्राचीन नगरीय हड़प्पा संस्कृति और उसके पश्चात प्राचीन गणतांत्रिक राज्यों एवं साम्राज्यों का उदय हुआ ।

क्या तुम जानते हो ?

अफ्रीका महाद्वीप में सहारा मरुस्थल संसार का सबसे बड़ा मरुस्थल है ।

थार का मरुस्थल

३. थार का मरुस्थल: थार का मरुस्थल राजस्थान, हरियाणा और गुजरात के कुछ क्षेत्रों में फैला हुआ है । इस मरुस्थल का कुछ क्षेत्र वर्तमान पाकिस्तान में भी व्याप्त है । इसके उत्तर में सतलुज नदी, पूर्व में अरावली पर्वत की श्रेणियाँ, दक्षिण में कच्छ का रण और पश्चिम में सिंधु नदी है । हिमाचल प्रदेश में घग्गर नदी का उद्‌गम होता है और यह नदी थार के मरुस्थल में पहुँचती है । पाकिस्तान में यह हाकरा नाम से जानी जाती है । राजस्थान और पाकिस्तान में इस नदी का पाट अब सूखा पड़ा है । इस सूखे पाटवाले क्षेत्र में हड़प्पा संस्कृति के अनेक स्थान बिखरे पड़े हैं ।

४. दक्खन का पठार : एक ओर पूर्वी तट और दूसरी ओर पश्चिमी तट और इनके बीच में स्थित भारत का भूप्रदेश दक्षिण दिशा में शंक्वाकार (संकरा) होता गया है । इस पठार के पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी हैं । तीन ओर से पानी से घिरा यह भूभाग समुद्र में किसी पर्वत की त्रिकोणीय चोटी के समान दिखाई देता है । इस भूप्रदेश को 'प्राय:द्‌वीप' कहते हैं । भारतीय प्राय:द्‌वीप का अधिकांश क्षेत्र दक्खन के पठार से व्याप्त है ।

दक्खनी पठार के उत्तर में सतपुड़ा और विंध्य पर्वत की श्रेणियाँ फैली हुई हैं । उसके पश्चिम में सह्याद्रि की पर्वतश्रेणियाँ हैं । उसे 'पश्चिम घाट' कहते हैं । सह्याद्रि की पश्चिमी तलहटी में कोकण और मलबार का तटीय प्रदेश है । दक्खन पठार के पूर्व में स्थित पर्वतों को 'पूर्व घाट' कहते हैं । इस पठार की भूमि उपजाऊ है तथा वहाँ हड़पा संस्कृति के पश्चातवाले कालखंड में अनेक कृषिप्रधान संस्कृतियाँ अस्तित्व में थीं । मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य था और इस साम्राज्य में दक्खन का पठार सामाविष्ट था । मौर्य साम्राज्य के बाद भी यहाँ अनेक छोटे-बड़े साम्राज्य अस्तित्व में आए और नष्ट हुए ।

५. समुद्री तटों के प्रदेश : प्राचीन भारत में हड़प्पा संस्कृति के समय से पश्चिमी देशों के साथ व्यापार होता था । यह व्यापार समुद्री मार्ग से चलता था । परिणामस्वरूप भारत के समुद्री बंदरगाहों से विदेशी संस्कृतियों और लोगों के साथ भारत का संपर्क और लेन-देन होता था। कालांतर में सड़क मार्ग से भी व्यापार और संचार प्रारंभ हुआ । फिर भी समुद्री मार्ग का महत्त्व बना रहा ।

६. समुद्र में स्थित द्‌वीप : बंगाल की खाड़ी में स्थित अंदमान और निकोबार भारतीय द्‌वीप हैं । साथ ही भारतीय द्‌वीपों का समूह लक्षद्‌वीप अरब सागर में स्थित है। प्राचीन समय में चलने वाले समुद्री व्यापार में इन द्‌वीपों का महत्त्व रहा होगा । 'पेरीप्लस आफ दी एरिथ्रिएन सी' अर्थात 'लाल सागर की जानकारी

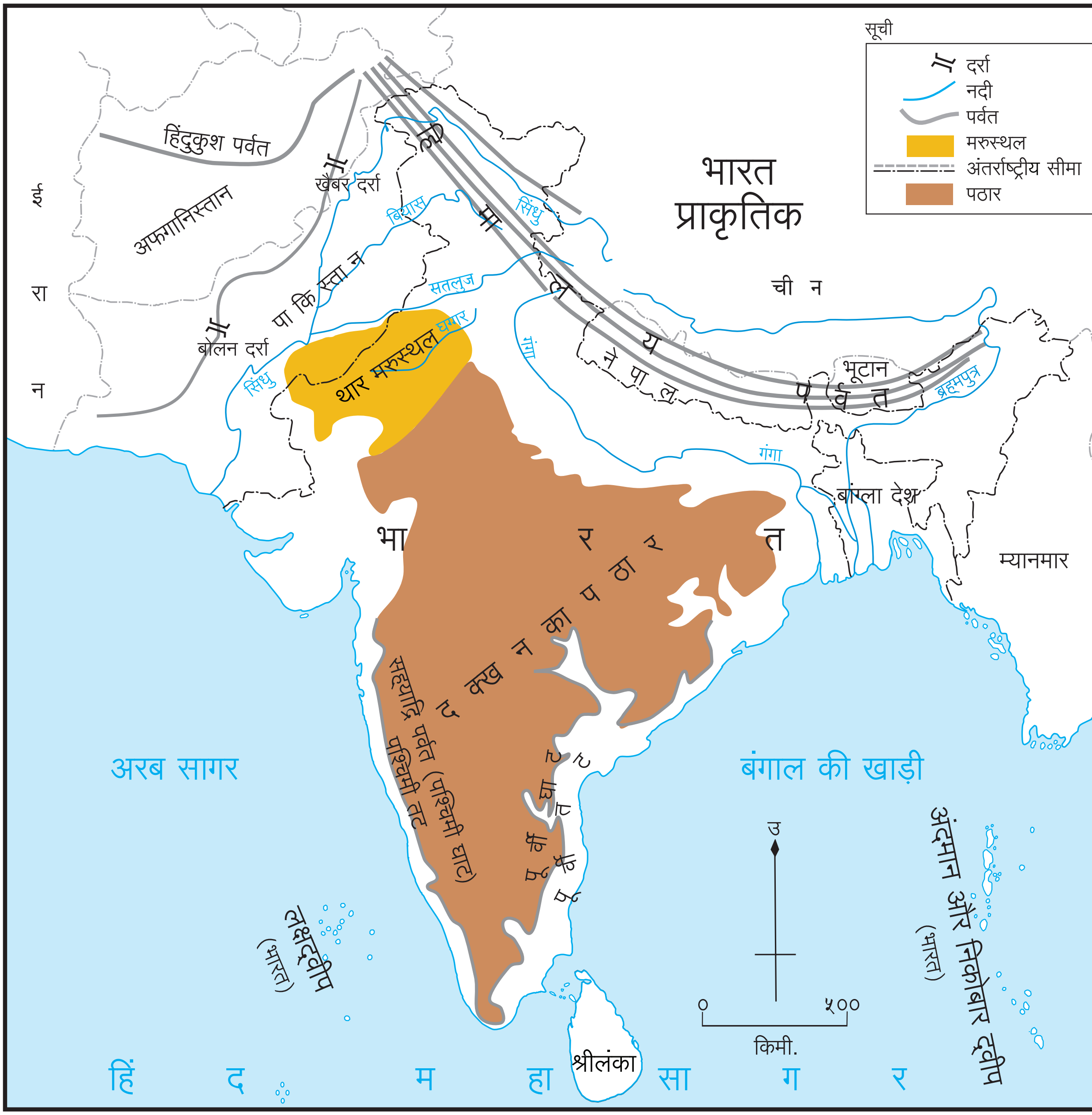

पुस्तिका ' नामक पुस्तक में भारतीय द्वीपों का उल्लेख मिलता है । यह पुस्तक एक अनाम ग्रीक नाविक द्वारा लिखी गई है ।

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में निम्न स्थानों को अंकित करो ।

१. हिमालय पर्वत
२. थार का मरुस्थल
३. पूर्वी समुद्री तट

अंदमान द्वीप

१.३ भारतीय उपमहाद्वीपः

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगर वर्तमान पाकिस्तान में हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान,

बांग्ला देश, श्रीलंका और हमारा भारत देश मिलकर बना हुआ संपूर्ण भूभाग 'दक्षिण एशिया' नाम से जाना जाता है । इस भूभाग में भारत देश के विस्तार और महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस भूप्रदेश को 'भारतीय उपमहाद्‌वीप' भी कहते हैं । हड़प्पा संस्कृति का विस्तार प्रमुखत: भारतीय उपमहाद्‌वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ था ।

चीन और म्यानमार यद्‌यपि हमारे पड़ोसी देश हैं परंतु ये देश दक्षिण एशिया अथवा भारतीय उपमहाद्‌वीप के हिस्से नहीं हैं । फिर भी इन देशों के प्राचीन भारत के साथ ऐतिहासिक संबंध रहे हैं । प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन में इन देशों का महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) इतिहास किसे कहते हैं ?

(२) मानवीय समाज दीर्घकाल तक अपनी बस्ती कहाँ बसाता है ?

(३) पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाले लोगों को अन्न के लिए प्रमुख रूप से किसपर निर्भर रहना पड़ता है ?

(४) भारत की सब से प्राचीन नगरीय संस्कृति कौन-सी है ?

२. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

(१) मानव का सामाजिक जीवन किन बातों पर अवलंबित रहता है ?

(२) हम जहाँ रहते हैं, उस प्रदेश की कौन-सी बातें हमारे जीवनयापन की साधन होती हैं ?

(३) किस प्रदेश को 'भारतीय उपमहाद्‌वीप' कहते हैं ?

३. कारण लिखो ।

(१) इतिहास और भूगोल का संबंध अटूट होता है ।

(२) लोगों को गाँव छोड़कर जाना पड़ता है ।

४. पर्वतीय क्षेत्रों और मैदानी प्रदेशों के जनजीवन में पाए जानेवाले अंतर को स्पष्ट करो ।

५. पाठ्‌यपुस्तक में दिए गए भारत-प्राकृतिक मानचित्र का निरीक्षण करो और उसपर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो:

(१) भारत के उत्तर में कौन-सी पर्वतश्रेणियाँ हैं ?

(२) भारत की उत्तर दिशा से आनेवाले मार्ग कौन-से हैं ?

(३) गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों का संगम कहाँ होता है ?

(४) भारत के पूर्व में कौन-से द्‌वीप हैं ?

(५) थार का मरुस्थल भारत की किस दिशा में है ?

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के जलाशयों की जानकारी लिखो ।

(२) संसार के मानचित्र प्रारूप में निम्न बातें दर्शाओ :

१. हिमालय पर्वत

२. रेशम मार्ग

३. अरब प्रदेश/अरबस्तान

* * *

विविध वेशभूषा

२. इतिहास के साधन

२.१ भौतिक साधन
२.२ लिखित साधन
२.३ मौखिक साधन
२.४ प्राचीन भारत के इतिहास के साधन
२.५ इतिहास का लेखन करते समय बरती जानेवाली सावधानी

करके देखो ।

- अपने परिवार के दादा जी–दादी जी के समय की वस्तुओं की सूची बनाओ ।
- अपने परिसर/गाँव की पुरानी वास्तुओं की जानकारी इकट्ठी करो ।

हमारे पूर्वजों द्‌वारा उपयोग में लाई गईं कई वस्तुएँ आज भी उपलब्ध हैं । उनके द्‌वारा उकेरे गए विभिन्न लेख हमें मिले हैं । इन साधनों की सहायता से हमें इतिहास का ज्ञान होता है । इसके अतिरिक्त रीति-रिवाजों, परंपराओं, लोककलाओं, लोकसाहित्य, ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर हमें इतिहास की जानकारी मिलती है । इन सभी को 'इतिहास के साधन' कहते हैं ।

इतिहास के साधनों के तीन प्रकार हैं; भौतिक साधन, लिखित साधन, मौखिक साधन ।

बताओ तो !

- किले/गढ़, गुफाएँ, स्तूप जैसी वास्तुओं को 'भौतिक साधन' कहते हैं । इनके अतिरिक्त अन्य किन-किन वास्तुओं को भौतिक साधन कहते हैं ?

२.१ भौतिक साधन

दैनिक जीवन में मनुष्य विभिन्न वस्तुओं का उपयोग करता है । पूर्वकालीन मनुष्य द्‌वारा उपयोग में लाई गईं अनेक वस्तुएँ आज हमें महत्वपूर्ण जानकारी दे सकती हैं । प्राचीन वस्तुओं में खपड़े के टुकड़ों के आकार, रंग और नक्काशी के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वे बरतन किस कालखंड के होंगे । गहनों-आभूषणों तथा अन्य वस्तुओं के आधार पर मानवीय समाज के पारंपारिक संबंधों की जानकारी प्राप्त होती है। अनाज, फलों के बीज, प्राणियों की हड्डियों के आधार पर आहार की जानकारी मिलती है । विभिन्न कालखंडों में मनुष्य द्‌वारा बनाए गए मकानों और इमारतों के खंडहर पाए जाते हैं । इसके अतिरिक्त सिक्के और मुद्राएँ भी पाई जाती हैं । इन सभी की सहायता से मानवीय व्यवहार की जानकारी प्राप्त होती है । इन सभी वस्तुओं और वास्तुओं अथवा उनके अवशेषों को इतिहास के 'भौतिक साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

अनाज के दाने बहुत समय तक टिके नहीं रहते । उनमें कीड़े लगते हैं । उनका बुरादा हो जाता है ।

प्राचीन समय में अनाज को पीसकर आटा बनाने से पहले अनाज को भूनते थे और बाद में उसे मोटा, दरदरा पीसते थे । अनाज को भूनते समय यदि उसके कुछ दाने अधिक भुने जाते अथवा जल जाते तो वे फेंक दिए जाते । ऐसे जले हुए दाने कई वर्षों तक टिके रहते हैं । ऐसे दाने उत्खनन में पाए जाते हैं । प्रयोगशाला में उनका परीक्षण किए जाने पर वे दाने किस अनाज के हैं, यह पहचाना जा सकता है ।

सिक्के

खपड़ा

गहने-आभूषण

बरतन

क्या तुम जानते हो ?

मंदिरों की दीवारें, गुफाओं की दीवारें, शिलाएँ, ताम्रपट, बरतन, कच्ची ईंटें, ताड़पत्र, भोजपत्र आदि पर उकेरे गए लेखों का समावेश लिखित साधनों में होता है ।

ताम्रपट

शिलालेख

२.२ लिखित साधन

अश्मयुग के मनुष्य ने अपने जीवन के अनेक प्रसंगों और भावनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । हजारों वर्ष बीतने पर मनुष्य लिखने की कला से अवगत हुआ ।

प्रारंभ में मनुष्य लिखकर रखने के लिए प्रतीकों और चिह्नों का उपयोग करता था । इन प्रतीकों और चिह्नों से लिपि बनने में हजारों वर्ष लग गए ।

प्रारंभिक समय में लिखने के लिए खपड़े, कच्ची ईंटें, पेड़ों की छालें, भोजपत्र जैसी सामग्री का उपयोग किया जाता था । ऐसी सामग्री पर किसी नुकीली वस्तु से लिखे जाने वाले विषय को उकेरा जाता । अनुभव एवं ज्ञान में जैसी-जैसी वृद्धि होती गई, वैसे-वैसे विविध पद्धतियों द्वारा लेखन का प्रारंभ हुआ। आस-पास में घटित घटनाओं, सरकारी दरबार में चलने वाले कामकाज का वृत्तांत आदि जानकारी लिखने की पद्धति प्रारंभ हुई । अनेक राजाओं ने अपने आदेशों, न्याय-निर्णयों और दानपत्रों को पत्थरों अथवा तांबे की पतरों पर उकेरकर रखा है । कालांतर में साहित्य की अनेक विधाओं का निर्माण हुआ । धार्मिक-सामाजिक ग्रंथों, नाटकों, काव्यों, यात्रा वर्णनों तथा वैज्ञानिक विषयों से संबंधित लेखन हुआ । ऐसी साहित्य सामग्री से तत्कालीन इतिहास को समझने में सहायता प्राप्त होती है । इस संपूर्ण साहित्य को इतिहास के 'लिखित साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

भोजवृक्ष की छाल से भोजपत्र बनाया जाता है । भोजवृक्ष कश्मीर में पाए जाते हैं ।

भोजवृक्ष

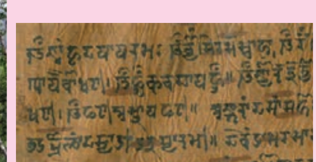

भोजपत्र

करके देखो ।

• अपने परिसर/गाँव के वस्तुसंग्रहालय में जाओ । वहाँ कौन-कौन-सी वस्तुएँ हैं ; इसपर निबंध लिखो ।

• आटे की चक्की के गीतों का संग्रह करो ।

• विभिन्न लोकगीतों को प्राप्त करो । उनमें से कोई एक लोकगीत विद्यालय के सांस्कृतिक समारोह में प्रस्तुत करो ।

२.३ मौखिक साधन

ओवी (चक्की के गीत), लोकगीत और लोककथा जैसा साहित्य लिखकर रखा नहीं जाता । उसका रचयिता अज्ञात होता है । वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्वारा संरक्षित रखा जाता है । ऐसे साहित्य को मौखिक परंपरा द्वारा संरक्षित साहित्य कहते हैं । इस साहित्य में ओवियाँ, लोकगीत, लोककलाएँ जैसी लोकसाहित्य विधाओं का समावेश होता है । ऐसे साधनों को इतिहास के 'मौखिक साधन' कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो ?

• **ओवी-** (चक्की का गीत)

पांडुरंग पिता । रुक्मिण माझी बया ।
आषाढ वारीयेला । पुंडलिक आला न्याया ।
(पांडुरंग पिता। रुक्मिण मेरी मैया ।
आषाढ़ के मेले में । ले जाने पुंडलिक आया।)

• **लोकगीत-**

महानगरी उजनी*   *(उज्जयिनी)
लई पुण्यवान दानी
तेथे नांदत होता राजा
सुखी होती प्रजा
तिन्ही लोकी गाजावाजा
असा उजनीचा इक्राम* राजा ।   *(विक्रमादित्य)
[महानगरी है यह उजनी
बड़ी पुण्यवान और दानी
राज्य करता था एक राजा
खुशहाल थी उसकी प्रजा
तीनों लोकों में था उसका नाम
उजनी का वह था राजा विक्रम]

क्या तुम जानते हो ?

प्राचीन भारत के इतिहास लेखन के साधन

भौतिक साधन

वस्तु	**वास्तु**
गुफाचित्र	गुफा
मिट्टी के बरतन	मकान
मिट्टी के शिल्प	स्तूप
मनके	गुफाएँ
रत्न, आभूषण	मंदिर
पत्थर के शिल्प	गिरजाघर (चर्च)
धातु की वस्तुएँ	मस्जिदें
सिक्के	स्तंभ
शस्त्र	

लिखित साधन

- हड़प्पा लिपि में लिखे लेख
- वैदिक साहित्य
- मेसोपोटेमिया का इष्टिका लेख
- महाभारत, रामायण ग्रंथों की पांडुलिपियाँ
- जैन, बौद्ध साहित्य
- ग्रीक इतिहासकार और यात्रियों का लेखन
- चीनी यात्रियों द्वारा लिखित यात्रा वर्णन
- व्याकरण ग्रंथ, पौराणिक ग्रंथ, उकेरे गए लेख

मौखिक साधन

प्राचीन भारत की मौखिक परंपरा द्वारा संरक्षित वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य अब लिखित स्वरूप में उपलब्ध हैं । यद्यपि इन साहित्यों का रूपांतर अब लिखित स्वरूप में हुआ है; फिर भी उनका पाठ करने की परंपरा अब भी जारी है । इतिहास के लेखन हेतु जब मौखिक साहित्य का उपयोग किया जाता है; तब उसका समावेश मौखिक साधनों में होता है ।

२.४ प्राचीन भारत के इतिहास के साधन

अश्मयुग से लेकर ई.स. की आठवीं शताब्दी तक का कालखंड भारतीय इतिहास का प्राचीन कालखंड माना जाता है । भारत के अश्मयुग की जानकारी पुरातत्वीय उत्खनन द्‌वारा प्राप्त होती है । उस कालखंड में लिपि का विकास नहीं हुआ था । ईसा पूर्व १५०० के पश्चात के प्राचीन इतिहास की जानकारी वैदिक साहित्य द्‌वारा प्राप्त होती है । आरंभ में वेद लिखित स्वरूप में नहीं थे । प्राचीन भारतीयों ने उन्हें कंठस्थ करने की तकनीक विकसित की । कालांतर में वेद लिखे गए । वैदिक साहित्य तथा उसके पश्चात लिखा गया साहित्य प्राचीन भारत के इतिहास के महत्वपूर्ण साधन हैं । इस साहित्य में ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, आरण्यक, रामायण, महाभारत महाकाव्य, जैन एवं बौद्‌ध ग्रंथ, नाटक, काव्य, शिलालेख, स्तंभ लेख, विदेशी यात्रियों के यात्रावर्णन आदि का समावेश होता है । इसी भाँति पुरातत्वीय उत्खनन में पाई गईं वस्तुओं, पुरातन वास्तुओं, भवनों, सिक्कों जैसे भौतिक साधनों की सहायता से हम प्राचीन भारत के इतिहास को समझ सकते हैं ।

२.५ इतिहास लेखन के प्रति सावधानी

इतिहास के साधनों को उपयोग में लाते समय सावधानी बरतनी पड़ती है । किसी लिखित प्रमाण को केवल पुरातन होने के कारण वह विश्वसनीय होगा ही; ऐसा नहीं होता है । वह किसका लिखा है, क्यों लिखा है, कब लिखा है, इसकी छानबीन करनी पड़ती है । विविध प्रामाणिक साधनों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों की एक-दूसरे के साथ पड़ताल करनी पड़ती है । इतिहास लेखन में सूक्ष्म विश्लेषण पद्‌धति को बहुत महत्व प्राप्त है ।

क्या करोगे ?

- यदि तुम्हें एक प्राचीन सिक्का मिल गया... तो...
  - अपने पास रखोगे ।
  - माता-पिता को दोगे ।
  - वस्तुसंग्रहालय में जमा करोगे ।

स्वाध्याय

१. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखो:

(१) लिखने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया जाता था ?

(२) वैदिक साहित्य द्‌वारा कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है ?

(३) मौखिक परंपरा द्‌वारा किस साहित्य को संरक्षित रखा गया है ?

२. निम्न साधनों का वर्गीकरण भौतिक, लिखित और मौखिक साधनों में करो:

ताम्रपट, लोककथाएँ, मिट्‌टी के बरतन, मनके, यात्रावर्णन, ओवियाँ (चक्की के गीत), शिलालेख, पोवाड़ा (शौर्यकाव्य), वैदिक साहित्य, स्तूप, सिक्के, भजन, पौराणिक ग्रंथ.

भौतिक साधन	लिखित साधन	मौखिक साधन
-----	-----	-----
-----	-----	-----
-----	-----	-----

३. पाठ में दिए गए मिट्‌टी के बरतन देखो और उनकी प्रतिकृतियाँ बनाओ ।

४. किसी भी सिक्के का निरीक्षण करो और उसके आधार पर निम्न मुद्दों का अंकन करो:

सिक्के पर अंकित पाठ्यांश, उपयोग में लाई गई धातु, सिक्के पर अंकित वर्ष

....

सिक्के पर अंकित चिह्न, सिक्के पर अंकित चित्र, भाषा, भार,

....

आकार, मूल्य.

....

५. मौखिक रूप मे कौन-कौन-सी बातें तुम्हें याद हैं ? उनको समूह में प्रस्तुत करो:

जैसे: कविता, श्लोक, प्रार्थना, पहाड़े आदि ।

उपक्रम :

भौतिक और लिखित साधनों के चित्र इकट्‌ठे करो और उन चित्रों की प्रदर्शनी बाल आनंद मेला में लगाओ ।

* * *

३. हड़प्पा संस्कृति

३.१ हड़प्पा संस्कृति
३.२ मकान और नगरीय संरचना
३.३ मुद्राएँ-बरतन
३.४ महास्नानगृह
३.५ जनजीवन
३.६ व्यापार
३.७ ह्रास के कारण

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में हड़प्पा संस्कृति के स्थानों के नाम लिखो ।

३.१ हड़प्पा संस्कृति

१९२१ ई.स. में पंजाब में रावी नदी के किनारे हड़प्पा नामक स्थान पर सब से पहले उत्खनन प्रारंभ हुआ । अत: इस संस्कृति को 'हड़प्पा संस्कृति' नाम प्राप्त हुआ । इस संस्कृति को 'सिंधु संस्कृति' के नाम से भी जाना जाता है ।

हड़प्पा की दक्षिण दिशा में लगभग ६५० कि. मी. की दूरी पर सिंधु नदी की घाटी में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर उत्खनन हुआ । हड़प्पा और मोहन जोदड़ो स्थानों पर हुए उत्खनन में जिन वस्तुओं और वास्तुओं के अवशेष प्राप्त हुए; उनमें अद्‌भुत साम्य था ।

धौलावीरा, लोथल, कालीबंगा, दायमाबाद आदि

स्थानों पर भी हुए उत्खनन में ऐसे ही अवशेष पाए गए हैं।

हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ सामान्यत: सर्वत्र एक समान पाई जाती हैं । इनमें नगरीय संरचना, सड़कें, भवन निर्माण, जल निस्सारण अथवा गंदे जल का निपटारा, मुद्राएँ, बरतन, खिलौने, मृतशरीर को दफनाने की पद्धति आदि का मुख्य रूप से समावेश होता है ।

बताओ तो !

- अपने परिसर/गाँव के मकानों की संरचना कैसी है ?
- क्या वे मकान खपरैल, सपाट छतवाले अथवा ढालू छतवाले हैं ?

३.२ मकान और नगरीय संरचना :

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के मकान और अन्य निर्माण कार्य मुख्य रूप से पक्की ईंटों से बने हुए थे । कुछ स्थानों पर निर्माण कार्य के लिए कच्ची ईंटों और पत्थरों का भी उपयोग किया जाता था । मकान के बीचोंबीच चौक और उसके चारों ओर कमरे बनाए जाते थे । इस प्रकार की संरचना मकानों की होती थी । मकानों के अहाते में कुएँ, स्नानगृह, शौचालय होते थे । गंदे जल का निपटारा कराने के लिए समुचित प्रबंधन किया जाता था । इसके लिए मिट्टी के पक्के परनारों का उपयोग किया जाता था । सड़कों की नालियाँ ईंटों से बनाई जाती थीं । ये नालियाँ ढँकी होती थीं । इससे यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पाकालीन लोग स्वास्थ्य के प्रति कितने अधिक जागरूक थे ।

हड़प्पा संस्कृति का कुआँ

बताओ तो !

- गंदा जल बहा ले जाने वाली नालियाँ यदि ढँकी न हों तो स्वास्थ्य से संबंधित कौन-कौन-सी समस्याएँ निर्माण होती हैं ।

सड़कें चौड़ी हैं और वे एक-दूसरे को समकोण में काटेंगी ; इस प्रकार बनाई गई हैं । परिणामस्वरूप चौकोन और रिक्त स्थान रह जाता था । इन रिक्त स्थानों में मकान बनाए जाते थे । नगरों के दो अथवा अधिक विभाग बनाए जाते थे तथा प्रत्येक विभाग स्वतंत्र परकोटे से संरक्षित रहता था ।

करके देखो ।

एक आलू लो । उसे बीच में से काटो । कटे हुए हिस्से पर कील की सहायता से कुछ अक्षर, आकृतियाँ उकेरो । अब इन अक्षरों और आकृतियों के उकेरे हुए हिस्सों को स्याही अथवा रंग में डुबोओ । उन रंगीन हिस्सों की कोरे कागज पर छाप लो । क्या होता है ; इसका निरीक्षण करो ।

३.३ मुद्राएँ-बरतन

हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ मुख्य रूप से चौकोर और स्टिएटाइट नामक पत्थर से बनाई जाती थीं । मुद्राओं पर विभिन्न प्राणियों की आकृतियाँ पाई जाती हैं । उनमें बैल, भैंस, हाथी, गैंडा, बाघ जैसे सचमुच के प्राणी तथा एक सींगवाले काल्पनिक प्राणी देखने को मिलते हैं । अन्य प्राणियों की आकृतियों की भाँति ही मनुष्य की आकृतियाँ भी पाई जाती हैं । इन मुद्राओं का उपयोग छाप लेने के लिए किया जाता है ।

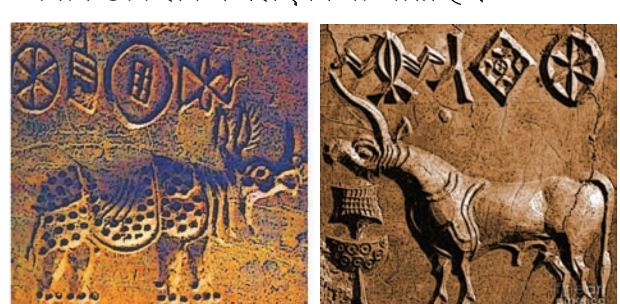

मुद्राएँ

करके देखो ।

मिट्‌टी के बरतन कैसे बनाए जाते हैं ; इसे समझने के लिए मिट्‌टी के बरतन बनानेवाले कारीगर से बातचीत करो ।

- किस मिट्‌टी का उपयोग करते हैं ?
- मिट्‌टी कहाँ से लाते हैं ?
- एक बरतन बनने के लिए कितना समय लगता है ?

हड़प्पा संस्कृति के स्थानों पर हुए उत्खनन द्‌वारा विभिन्न प्रकारों और आकारों के बरतन पाए गए हैं । उनमें लाल रंग के पृष्ठभाग पर काले रंग से बनाए गए नक्काशीवाले बरतन हैं । नक्काशी के नमूनों के रूप में मछली की चोइयाँ, एक-दूसरे में पिरोए हुए वलय, पीपल के पत्ते जैसे प्रतीकों का समावेश है । हड़प्पा संस्कृति के लोग मृत व्यक्ति को दफनाते समय उस व्यक्ति के शव के साथ मिट्‌टी के बरतन दफना देते थे ।

बरतन

निरीक्षण करो ।

अपने परिसर के तैराकी तालाब पर जाओ। तालाब का पानी बदलने और तालाब में नए-से पानी भरने की प्रणाली का निरीक्षण करो ।

वर्तमान तैराकी तालाब और हड़प्पाकालीन स्नानगृह की तुलना करो ।

३.४ महानस्नानागार

मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानगृह पाया गया है। महास्नानागार का स्नानकुंड लगभग २.५ मीटर गहरा था । उसकी लंबाई लगभग १२ मीटर और चौड़ाई लगभग ७ मीटर थी । कुंड का पानी रिस न जाए; इसके लिए उसे भीतर से पक्की ईंटों से बाँधा गया था । उसमें उतरने की व्यवस्था थी तथा समय-समय पर कुंड का पानी बदलने की सुविधा भी थी ।

मोहनजोदड़ो का महानस्नानागार

बताओ तो !

- अपने परिसर/गाँव में उगनेवाले फलों/फसलों के नाम लिखो ।
- अपने परिसर/गाँव के लोग कौन-कौन-से वस्त्रों का उपयोग करते हैं ?
- उन गहनों/आभूषणों के नाम लिखो; जो तुम्हें मालूम हैं ।

३.५ जनजीवन

हड़प्पा संस्कृति के लोग खेती करते थे । कालीबंगा में जोते हुए खेत का प्रमाण मिला है । कालीबंगा के लोग विभिन्न फसलें उपजाते थे । उनमें गेहूँ, जौ(बार्ली) प्रमुख फसलें थीं । राजस्थान में जौ की और गुजरात में मडुआ की फसल बड़ी मात्रा में उगाई जाती थी । इसके अतिरिक्त मटर, तिल, मसूर आदि फसलें उगाई जाती थीं । हड़प्पा संस्कृति के लोग कपास से अवगत थे ।

उत्खनन में पाई गईं मूर्तियों (पुतले), मुद्राओं पर अंकित चित्रों और कपड़े के अवशेष आदि के प्रमाणों के आधार पर मालूम होता है कि वे लोग वस्त्र बुनते थे । स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा में घुटने तक का वस्त्र एवं ऊपरी दोपट वस्त्र का समावेश था ।

उत्खनन में विभिन्न प्रकार के गहने/आभूषण पाए गए हैं । वे गहने/आभूषण स्वर्ण, तांबा, रत्न तथा सीपियाँ, कौड़ियाँ, बीज आदि से बने हुए थे । बहुपरतोंवाली मालाएँ, अँगूठियाँ, बाजूबंद, और कमरबंद (करधनी) जैसे आभूषणों का स्त्री-पुरुष उपयोग करते थे । स्त्रियाँ भुजा तक चूड़ियाँ पहनती थीं ।

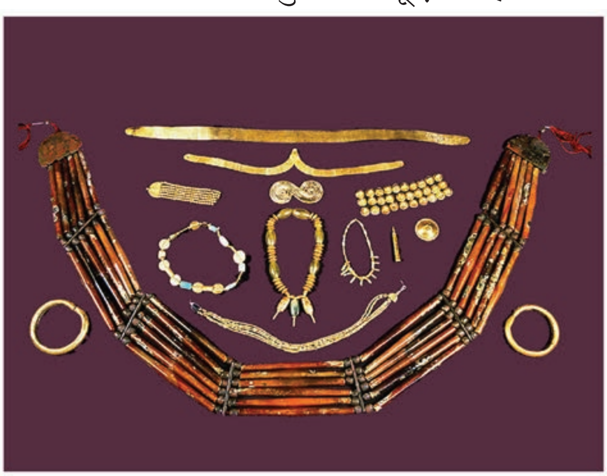

हड़प्पा संस्कृति के आभूषण

यहाँ पाया गया वैशिष्ट्यपूर्ण एक पुतला हड़प्पाकालीन कला का उत्कष्ट नमूना है । उसके चेहरे का प्रत्येक भाव बहुत स्पष्ट है । यही नहीं बल्कि उसके द्‌वारा कंधे पर ओढ़ी हुई शाल तथा उस शाल पर अंकित त्रिदल की नक्काशी बहुत ही कलात्मक ढंग से दर्शाई गई है ।

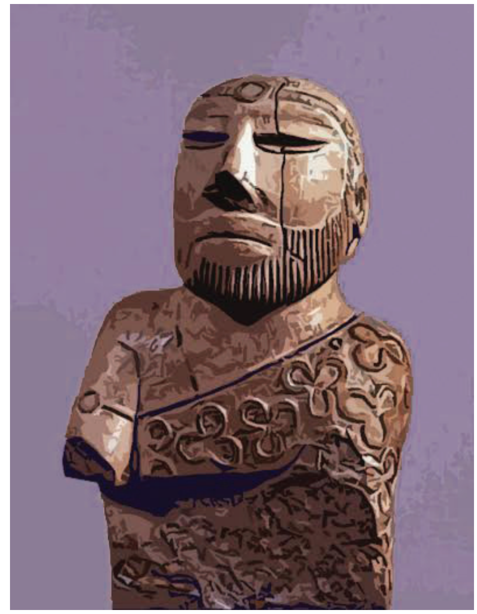

हड़प्पाकालीन कला का नमूना

करके देखो ।

अपने समीप की पंसारी की दुकान पर जाओ । दुकानदार अपनी दुकान के लिए आवश्यक माल/सामान कहाँ से लाता है; इसकी जानकारी प्राप्त करो । उन वस्तुओं की सूची बनाओ ।

३.६ व्यापार

हड़प्पा संस्कृति के लोग भारत में तथा भारत के बाहरी देशों के साथ व्यापार करते थे । सिंधु नदी की घाटी में उत्तम श्रेणी की कपास होती थी । इस कपास का पश्चिम एशिया, दक्षिण यूरोप और इजिप्त देशों में निर्यात होता था । सूती वस्त्र का भी निर्यात होता था । इजिप्त को मलमल वस्त्र की आपूर्ति हड़प्पा संस्कृति के व्यापारियों द्‌वारा होती थी । कश्मीर, दक्षिण भारत, ईरान, अफगानिस्तान, बलुचिस्तान देशों से चांदी, जस्ता, बहुमूल्य नगीने, माणिक, देवदार की लकड़ी आदि वस्तुएँ लाई जाती थीं । विदेशों के साथ चलने वाला यह व्यापार सड़क और समुद्री मार्ग से चलता था । उत्खनन में पाई गईं कुछ मुद्राओं पर जहाजों के चित्र उकेरे गए हैं । लोथल नामक स्थान पर विशाल बंदरगाह पाया गया है । हड़प्पा संस्कृति का व्यापार अरब सागर के तट से चलता था ।

लोथल का बंदरगाह (अवशेषों के आधार पर पुनर्रचना)

३.७ ह्रास के कारण

निरंतर आनेवाली बाढ़, बाहरी समूहों के हमले, व्यापार में होनेवाला घाटा जैसी बातें हड़प्पा संस्कृति के ह्रास का कारण बनीं । इसी भाँति वर्षा की मात्रा कम हो जाना, नदियों के पाट सूख जाना, भूकंप, समुद्रीतल में होनेवाले परिवर्तन जैसे कारणों से भी कुछ स्थान उजड़ गए । इन कारणों से बड़ी मात्रा में लोग स्थलांतर कर गए और हड़प्पा संस्कृति के नगरों का ह्रास हुआ ।

हड़प्पा संस्कृति समृद्ध एवं संपन्न नगरीय संस्कृति थी । इस संस्कृति ने भारतीय संस्कृति की नींव रखी ।

स्वाध्याय

१. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(१) इस संस्कृति को हड़प्पा नाम क्यों प्राप्त हुआ होगा ?

(२) हड़प्पा संस्कृति के बरतनों पर अंकित नक्काशी के नमूनों में किन प्रतीकों का समावेश है ?

(३) हड़प्पा संस्कृति के व्यापारी इजिप्त को किस वस्त्र की आपूर्ति करते थे ?

२. प्राचीन स्थानों की सैर पर जाते समय क्या करोगे ?

जैसे-स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करना, प्रदूषण की रोक-थाम करना, ऐतिहासिक साधनों का संरक्षण करना आदि ।

३. मोहनजोदड़ो के स्नानागार का चित्र बनाओ ।

४. निम्न तालिका में हड़प्पाकालीन जनजीवन की जानकारी लिखो ।

प्रमुख फसलें	वेशभूषा	गहने/आभूषण
(१) ----	----	----
(२) ----	----	----
(३) ----	----	----
(४) ----	----	----

५. एक शब्द में उत्तर दो । ऐसे प्रश्न तुम स्वयं तैयार करो और उनके उत्तर लिखो :

जैसे- हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ बनाने के लिए उपयोग में लाया गया पत्थर ।

६. हड़प्पा संस्कृति की समकालीन अन्य वैश्विक संस्कृतियों को संसार के मानचित्र प्रारूप में दर्शाओ ।

उपक्रम :

(१) तुम अपने विद्यालय का प्रारूप बनाओ और उसमें विद्यालय के विभिन्न स्थानों को दर्शाओ ।

जैसे- ग्रंथालय, मैदान, संगणक कक्ष आदि ।

(२) अपने गाँव और घर की अनाज भंडारण पद्धति पर विस्तार में एक टिप्पणी लिखो ।

* * *

हड़प्पाकालीन खिलौने

४. वैदिक संस्कृति

४.१ वैदिक साहित्य

४.२ परिवार व्यवस्था, दैनिक जीवन

४.३ खेती, पशुपालन, आर्थिक और सामाजिक जीवन

४.४ धार्मिक संकल्पनाएँ

४.५ शासन व्यवस्था

४.१ वैदिक साहित्य

'वेद' साहित्य पर आधारित संस्कृति ही वैदिक संस्कृति है । हमारे अति प्राचीन साहित्य के रूप में वेदों को माना जाता है । अनेक ऋषियों द्‌वारा वेदों की निर्मिति की गई है । वेदों में समाविष्ट कुछ सूक्त स्त्रियों द्‌वारा भी रचित हैं ।

वैदिक साहित्य की भाषा संस्कृत थी । वैदिक साहित्य अत्यंत संपन्न साहित्य है । इन वेदों में ऋग्वेद मूल ग्रंथ माना जाता है । वह काव्यरूप में है । ऋग्वेदसहित यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये चार वेद हैं । इन चार वेदों के ग्रंथों को 'संहिता' कहते हैं । विद् का अर्थ जानना है । इसी से 'वेद' संज्ञा का निर्माण हुआ है । इसका अर्थ 'ज्ञान' होता है । मौखिक पठन के आधार पर वेदों को संरक्षित रखा गया । वेदों को 'श्रुति' भी कहते हैं ।

ऋग्वेद संहिता : ऋचाओं से बने हुए वेद को 'ऋग्वेद' कहते हैं । स्तुति करने के लिए रचे गए पद्‌य को ऋचा कहते हैं । किसी देवता की स्तुति करने के लिए कई ऋचाओं को गूँफकर बनाए गए काव्य को 'सूक्त' कहते हैं । ऋग्वेद संहिता में विभिन्न देवताओं के स्तुतिपरक सूक्त हैं ।

यजुर्वेद संहिता : यज्ञ में जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता है; उनका समावेश यजुर्वेद संहिता में है । यज्ञ विधि में किन मंत्रों का पठन कब और कैसे करें; इसका मार्गदर्शन इस संहिता में प्राप्त है । इस संहिता में पद्‌य में रचित मंत्रों का स्पष्टीकरण गद्‌य में किया गया है ।

क्या तुम जानते हो ?

कुछ सूक्तों के हिंदी भाषा में अर्थ :

* "हे ईश्वर, बहुत वर्षा होने दो, हमारे खेतों में लहलहाती फसल होने दो । हमारे बच्चों को खूब दूध -घी मिलने दो ।"
* "हमारे घरों में गायें आने दो । हमारी गोठों में उन्हें आनंद से रहने दो । उनके बहुत बछिया-बछड़े होने दो ।"
* "लोगो चलिए, उठिए, उषा के आगमन के साथ अंधेरा नष्ट हो गया है और प्रकाश का आगमन हो रहा है । उषा ने संपूर्ण विश्व को जगाया है । हम अपने-अपने कार्य और उद्‌योग कर धन प्राप्त करेंगे ।"

सामवेद संहिता : कुछ यज्ञों की विधियों के समय सुर-ताल में मंत्रों का गान किया जाता था । यह गायन कैसे करना चाहिए; इसका मार्गदर्शन सामवेद संहिता में किया गया है । भारतीय संगीत के निर्माण में सामवेद का बहुत बड़ा योगदान है ।

अथर्ववेद संहिता : अथर्ववेद की संहिता को अथर्व ऋषि का नाम दिया गया है । अथर्ववेद में दैनिक जीवन की अनेक बातों को महत्त्व दिया गया है । इसमें यह बताया गया है कि जीवन में आनेवाले संकटों और दुखों का निवारण किस प्रकार किया जा सकता है । इसी भाँति इसमें असंख्य औषधीय वनस्पतियों की जानकारी भी दी गई है । राजा को अपना राज्य किस प्रकार चलाना चाहिए; इसका भी मार्गदर्शन इसमें किया गया है ।

संहिताओं की निर्मिति होने के बाद ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों को रचा गया । वैदिक साहित्य में उनका भी समावेश किया जाता है ।

ब्राह्मण ग्रंथ : यज्ञ विधियों में वेदों का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए; इसका मार्गदर्शन करनेवाले ग्रंथों को 'ब्राह्मण ग्रंथ' कहते हैं । प्रत्येक वेद के स्वतंत्र ब्राह्मण ग्रंथ हैं ।

आरण्यक : अरण्य में जाकर एकाग्रता से किया

मनन 'आरण्यक' ग्रंथों में प्रस्तुत किया गया है । यज्ञ विधि संपन्न करते समय किसी भी प्रकार की भूल न हो; इसकी सावधानी इसमें बरती गई है ।

उपनिषद : 'उपनिषद' का अर्थ गुरु के निकट बैठकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान है । हमारे मन में जन्म-मृत्यु जैसी कई घटनाओं के बारे में असंख्य प्रश्न उठते रहते हैं । उन प्रश्नों के उत्तर आसानी से नहीं मिलते । ऐसे गहन प्रश्नों पर उपनिषदों में विचार-विमर्श किया गया है ।

चार वेदों, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों और उपनिषदों को रचने में लगभग पंद्रह सौ वर्षों की कालावधि लग गई । इस कालावधि में वैदिककालीन संस्कृति में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते गए । उन परिवर्तनों और वैदिक समय के जनजीवन का अध्ययन करने के लिए वैदिक साहित्य महत्त्वपूर्ण साधन है ।

४.२ परिवार व्यवस्था, दैनिक जीवन

वैदिक समय में संयुक्त परिवार पद्धति प्रचलित थी । परिवार का वरिष्ठ पुरुष परिवार का प्रमुख अर्थात 'गृहपति' होता था । गृहपति के परिवार में उसके वृद्ध माता-पिता, उसके छोटे भाई और उन भाइयों के परिवार, उसकी पत्नी और बेटे, उसके बेटों के परिवार का समावेश रहता था । यह परिवार व्यवस्था पितृप्रधान थी । प्रारंभिक समय में लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रैयी जैसी कुछ विदुषियों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है । परंतु धीरे-धीरे स्त्रियों पर अधिक बंधन लदते गए । परिवार और समाज में उनका स्थान अधिकाधिक गौण बनता गया ।

वैदिक समय में मकान मिट्टी अथवा टट्टियों बाड़ों के बने होते थे । घास अथवा बेलों की मोटी टट्टियाँ अथवा बाड़ बुनकर उसे गोबर, मिट्टी से लीपते थे । यह एक प्रकार की दीवार होती थी । इन मकानों की भूमि गोबर-मिट्टी से लीपी जाती थी । मकान के लिए 'गृह' अर्थात 'शाला' शब्द का प्रयोग किया जाता था ।

वैदिक समय के लोगों के भोजन में मुख्य रूप से गेहूँ, जौ, चावल जैसे धानों का समावेश था । इन धानों से वे विभिन्न पदार्थ बनाते थे । वैदिक साहित्य में 'यव' 'गोधूम' ' व्रीहि' जैसे शब्द पाए जाते हैं । यव अर्थात जौ (बार्ली), गोधूम अर्थात गेहूँ और व्रीहि अर्थात चावल है । वैदिक लोगों को दूध, दही, मक्खन, घी, शहद जैसे पदार्थ प्रिय थे । उनके भोजन में उड़द, मसूर, तिल तथा मांस जैसे पदार्थों का भी समावेश था ।

वैदिक युग के मकान

वैदिक युग में लोग ऊनी और सूती वस्त्रों का उपयोग करते थे । वल्कल अर्थात वृक्षों की छालों से बनाए गए वस्त्रों का भी उपयोग करते थे । इसी भाँति पशुओं के चमड़ों का भी उपयोग वस्त्रों के रूप में करते थे । स्त्रियाँ और पुरुष फूलों की मालाएँ, विभिन्न प्रकार के मनकों की मालाएँ और सोने के आभूषणों का उपयोग करते थे । गले में पहना जानेवाला 'निष्क' नामक आभूषण विशेष लोकप्रिय रहा होगा । उसका उपयोग वस्तुओं के क्रय-विक्रय हेतु भी किया जाता था ।

गायन, वादन, नृत्य, पाँसों का खेल, रथों की दौड़ और शिकार करना लोगों के मनोरंजन के साधन थे । वीणा, शततंतु, झाँझ और शंख उनके प्रमुख वाद्य थे । वे डमरू और मृदंग जैसे तालवाद्यों का भी उपयोग करते थे ।

वैदिक युग के वाद्य

४.३ खेती, पशुपालन, आर्थिक और सामाजिक जीवन

वैदिक युग में खेती करना प्रमुख व्यवसाय था । कई बैलों को हल के साथ जोतकर खेतों की जोताई की जाती थी । हल में लोहे की फाल लगाई जाती थी । अथर्ववेद में फसलों में लगनेवाले रोग, फसलों को नष्ट करने वाले कीट और उनके उपायों पर विचार किया गया है । खाद के रूप में गोबर का उपयोग किया जाता था ।

वैदिक युग में घोड़ा, गाय-बैल, कुत्ता जैसे प्राणियों को विशेष महत्त्व प्राप्त था । विनिमय के रूप में गायों का उपयोग किया जाता था । फलस्वरूप गायों को विशेष महत्व और मूल्य प्राप्त था । गायों को कोई चुराकर ले न जाए; इसकी विशेष सावधानी बरती जाती थी । घोड़ा अति वेगवान पशु है । उसे पालतू बनाकर रथों में जोतने में वैदिक युग के लोग पारंगत थे । वैदिक युग के रथों के पहिये आरेवाले थे । ठोस पहियों की तुलना में आरेवाले पहिये भार में हल्के होते हैं । घोड़ों से जुते हुए तथा आरेवाले पहियों के वेदकालीन रथ बहुत वेगवान हुआ करते थे ।

वैदिक युग का रथ

क्या तुम जानते हो ?

घोड़े को 'अश्व' कहते हैं । किसी इंजन की गति को मापने के लिए जिस इकाई का उपयोग किया जाता है; उसे 'अश्वशक्ति' (हॉर्सपॉवर) कहते हैं ।

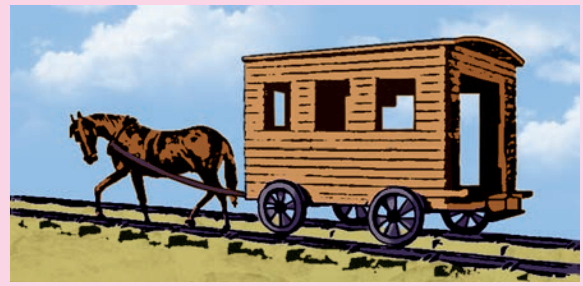

वैदिक युग में खेती और पशुपालन के अतिरिक्त अन्य अनेक व्यवसायों का भी विकास हुआ था । व्यवसायी तथा श्रमिक अर्थात कारीगर समाज व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग थे । 'श्रेणी' शब्द से अपनी पहचान बनाए रखनेवाले उनके स्वतंत्र संघ थे । इन श्रेणियों के प्रमुख व्यक्ति को 'श्रेष्ठी' कहते थे, परंतु धीरे-धीरे व्यवसायियों, कारीगरों की श्रेणी दोयम अर्थात गौण होती गई ।

तत्कालीन समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण थे । ये वर्ण व्यवसाय के आधार पर निर्धारित थे । कालांतर में ये वर्ण जन्म के आधार पर निर्धारित किए जाने लगे । परिणामतः जातियाँ उत्पन्न हुईं । इस जाति व्यवस्था के फलस्वरूप समाज में विषमता पैदा हुई ।

आदर्श जीवन कैसे जीएँ; इस बारे में वैदिक युग में कुछ संकल्पनाएँ रूढ़ हो गई थीं । उनमें जन्म से लेकर मृत्यु तक के चार चरणों को 'चार आश्रम' कहा गया है । पहले चरण से तात्पर्य 'ब्रह्मचर्याश्रम' है । इस चरण में गुरु के सानिध्य में रहकर विद्या प्राप्त की जाती थी ।

ब्रह्मचर्याश्रम को सफलता से पूर्ण करने के पश्चात अगला चरण 'गृहस्थाश्रम' होता था । इस आश्रम में पुरुष अपनी पत्नी के सहयोग से परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे; यह अपेक्षा की जाती थी । तीसरे आश्रम से तात्पर्य 'वानप्रस्थाश्रम' था । इस चरण में मनुष्य घर-बार का मोह त्यागकर दूर चला

गुरु-शिष्य

जाए, निर्जन स्थान पर रहे और अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन बिताए; यह अपेक्षा की जाती थी । चौथे चरण से तात्पर्य 'संन्यासाश्रम' है । इस चरण में मनुष्य सभी रिश्ते-नातों को त्यागकर मानव जन्म का अर्थ समझने में जीवन व्यतीत करे, बहुत समय तक एक स्थान पर न रहे; यह संकेत निहित था ।

४.४ धार्मिक संकल्पनाएँ

वैदिक युग की धार्मिक संकल्पनाओं में प्रकृति के सूर्य, हवा, वर्षा, बिजली, आँधी, नदियाँ जैसी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप मान लिया गया था । वे जीवनदायी सिद्‌ध हों; इसके लिए वेदों में उनकी प्रार्थनाएँ की गई हैं । उन्हें प्रसन्न करने के लिए वैदिक युग के लोग अग्नि में विभिन्न पदार्थ अर्पित करते थे । उस पदार्थ को 'हवि' कहते थे । इस प्रकार अग्नि में 'हवि' अर्पित करने की विधि को 'यज्ञ' कहते हैं । प्रारंभ में यज्ञ विधियों का स्वरूप सीधा-सादा था । कालांतर में यज्ञ के नियम अधिकाधिक कठोर होते गए । इससे यज्ञ विधि कार्य जटिल होता गया । परिणामतः पुरोहितों का महत्त्व

यज्ञ

बढ़ता गया ।

सृष्टि का व्यवहार कैसे चलता है; इसका भी विचार वैदिक युग के लोगों ने किया था । ग्रीष्मकाल के बाद वर्षाकाल आता है और वर्षाकाल के बाद शीतकाल । यह सृष्टि का नियमित चक्र है । सृष्टि का चक्र और उसकी गति द्‌वारा घूमनेवाले जीवन चक्र को वेदकालीन लोगों ने 'ऋत' नाम दिया था । सभी सजीवों का जीवन सृष्टि के चक्र का ही एक अंग है । सृष्टि के चक्र में दोष उत्पन्न होने पर संकट आते हैं । ऐसा न हो; इसलिए प्रत्येक को सावधानी बरतनी चाहिए । किसी को भी सृष्टि के नियमों का भंग नहीं करना चाहिए । ऐसा आचरण करना ही धर्म का पालन करना है; ऐसा माना जाता था ।

चलो,विचार विमर्श करेंगे ।

सृष्टि के चक्र में दोष किस कारण उत्पन्न हो सकते हैं? वे दोष उत्पन्न न हों; इसके लिए तुम कौन-से प्रयास करोगे ? जैसे- बरसात कम हो तो पेयजल का नियोजन कैसे करोगे ?

४.५ शासन व्यवस्था

वैदिक युग में प्रत्येक ग्राम समूह का एक प्रमुख व्यक्ति होता था । उसे 'ग्रामणी' कहते थे । कई ग्रामों के समूह को 'विश्' कहते थे और उसके प्रमुख को 'विश्पति' कहते थे । कई 'विश्' मिलकर 'जन' बन जाते थे । कालांतर में जब यह जन किसी विशिष्ट प्रदेश में स्थायी हो जाता था तब उस प्रदेश को 'जनपद' कहते थे । 'जन' के प्रमुख को 'नृप' अथवा 'राजा' कहा जाता था । प्रजा की रक्षा करना, कर इकट्‌ठा करना और सुचारु रूप से शासन व्यवस्था चलाना राजा के कर्तव्य थे ।

राज्य की शासन व्यवस्था उत्तम पद्‌धति से चलाने के लिए राजा सहायकों के रूप में कुछ अधिकारियों की नियुक्ति करता था । इन अधिकारियों में पुरोहित एवं सेनापति विशेष महत्त्वपूर्ण अधिकारी थे । कर इकट्‌ठा करनेवाले अधिकारी को 'भागदुघ' कहते थे । भाग का अर्थ 'हिस्सा' होता है । 'जन' की आय में राजा का

‘भाग’ इकट्‌ठा करनेवाला अधिकारी ‘भागदूघ’ था । राजा को मार्गदर्शन करने हेतु ‘सभा’, ‘समिति’, विदथ’ और ‘जन’ ये चार संस्थाएँ थीं । इन संस्थाओं में राज्य के लोग सहभागी होते थे । ‘सभा’ और ‘विदथ’ संस्थाओं के कामकाज में स्त्रियों का भी सहभाग था । राज्य के वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्तियों के मंडल को ‘सभा’ कहते थे तथा लोगों की साधारण बैठक को ‘समिति’ कहते थे । समिति में लोगों का सहभाग रहता था ।

आगे चलकर वैदिक विचारधारा में ‘स्मृति’ और ‘पुराण’ नामक साहित्य का निर्माण हुआ । वेद, स्मृति, पुराण, स्थानीय लोकधारणाएँ आदि पर आधारित धार्मिक विचारधारा आगे चलकर ‘हिंदू’ नाम से पहचानी जाने लगी ।

प्राचीन भारत में यज्ञ विधि और वर्ण व्यवस्था को लेकर वैदिक विचारधारा से भिन्न भूमिका वाली धार्मिक विचारधाराएँ अस्तित्व में थीं । अगले पाठ में हम उन विचारधाराओं का परिचय प्राप्त करेंगे ।

स्वाध्याय

१. पाठ में दिए पाठ्यांश का विचार करके उत्तर लिखो :

(१) वैदिक साहित्य में विदुषियाँ

....

(२) वैदिक युग के मनोरंजन के साधन

....

(३) वैदिक युग के चार आश्रम

....

२. सत्य अथवा असत्य पहचानो :

(१) यज्ञ में जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता था – ऋग्वेद

(२) जिस वेद को अथर्व ऋषि का नाम दिया गया –अथर्ववेद

(३) यज्ञ विधियों के समय मंत्र गायन हेतु मार्गदर्शन करनेवाला वेद –सामवेद

३. एक शब्द में उत्तर लिखो :

(१) वैदिक साहित्य की भाषा .... थी ।

(२) विद्‌ का अर्थ .... है ।

(३) गोधूम का अर्थ .... है ।

(४) परिवार का प्रमुख से तात्पर्य .... है ।

(५) श्रेणियों के प्रमुख को .... कहते थे ।

४. नाम लिखो :

(१) वे वाद्‌य : जो तुम्हें मालूम हैं ।

....

(२) वर्तमान समय की स्त्रियों के कम-से-कम दो आभूषण ....

(३) वर्तमान मनोरंजन के साधन

....

५. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) वैदिक युग के लोगों के भोजन में किन-किन पदार्थों का समावेश था ?

(२) वैदिक युग में गायों की विशेष सावधानी क्यों बरती जाती थी ?

(३) संन्यासाश्रम में मनुष्य से किस प्रकार के आचरण की अपेक्षा की जाती थी ?

६. टिप्पणी लिखो :

(१) वैदिक युग की धार्मिक संकल्पनाएँ

(२) वैदिक युग के मकान

(३) वैदिक युग की शासन व्यवस्था

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के कुछ कारीगरों से बातचीत करो और उनकी जानकारी लिखो ।

(२) पाठ में आए हुए नए शब्दों और उनके अर्थों की सूची बनाओ ।

* * *

५. प्राचीन भारत में धार्मिक विचार

५.१ जैन धर्म
५.२ बौद्ध धर्म
५.३ यहूदी धर्म (ज्यू धर्म)
५.४ ईसाई धर्म
५.५ इस्लाम धर्म
५.६ पारसी धर्म

वैदिक युग के अंतिम चरण में यज्ञविधियों की छोटी-छोटी बातों को अनावश्यक महत्त्व प्राप्त हो गया था । इन छोटी-छोटी बातों का ज्ञान केवल पुरोहित वर्ग को ही था । अन्य वर्गों को उन बातों का ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता नहीं थी । वर्णव्यवस्था के नियम और बंधन अत्यंत कठोर बनते गए थे । मनुष्य के कर्म और पुरुषार्थ की अपेक्षा उसका जन्म किस वर्ण में हुआ; इसपर समाज में उसका स्थान निश्चित किया जाने लगा । परिणामस्वरूप उपनिषदों के समय से ही धर्म का विचार यज्ञविधियों तक सीमित न रखते हुए उसे अधिक व्यापक बनाने के प्रयास प्रारंभ होते दिखाई देते हैं, परंतु उपनिषदों में आत्मा का स्वरूप, आत्मा का अस्तित्व जैसी बातों पर विचार किया गया था । ये विचार सामान्य लोगों को समझने में जटिल प्रतीत होते थे । अत: विशिष्ट देवताओं/ईश्वर की उपासना पर बल देनेवाले भक्ति पंथों का निर्माण हुआ । जैसे- शिव जी के भक्तों का शैव पंथ और भगवान विष्णु के भक्तों का वैष्णव पंथ । इन देवताओं के विषय में भिन्न-भिन्न पुराण लिखे गए ।

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में सामान्य मनुष्य सरलता से धर्म को समझ सकें; ऐसा धार्मिक विचार प्रस्तुत करनेवाली धाराएँ निर्माण हुईं । प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की उन्नति का मार्ग खोजने की स्वतंत्रता प्राप्त है; इसका बोध अनेकों को हुआ । इसी बोध द्‌वारा कालांतर में नए धर्मों का उदय हुआ । इन धर्मों ने पूरी स्पष्टता से यह कहा कि व्यक्ति की उन्नति के लिए जात-पाँत के भेदभाव को कोई महत्त्व नहीं है । इन धर्मों ने लोगों के मन पर शुद्‌ध आचरण का महत्त्व अंकित किया । नए धार्मिक विचारों के प्रवर्तकों में वर्धमान महावीर और गौतम बुद्‌ध के कार्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं ।

५.१ जैन धर्म

जैन धर्म भारत के प्राचीन धर्मों में एक धर्म है । इस

वर्धमान महावीर

धर्म में 'अहिंसा' सिद्‌धांत को विशेष महत्त्व प्राप्त है । धर्म के ज्ञान को जो व्याख्यायित करता है; उसे जैन धर्म में तीर्थंकर कहते हैं । जैन परंपरा के कथनानुसार कुल २४ तीर्थंकर हुए । वर्धमान महावीर जैन धर्म की परंपरा में चौबीसवें तीर्थंकर हैं ।

वर्धमान महावीर (ईसा पूर्व ५९९ ते ईसा पूर्व ५२७)

हम जिस राज्य को बिहार के नाम से जानते हैं; उस राज्य में प्राचीन काल में वृज्जी नामक एक महाजनपद था । वैशाली उसकी राजधानी थी । वैशाली नगर के एक क्षेत्र-कुंडग्राम में वर्धमान महावीर का जन्म हुआ । उनके पिता का नाम सिद्‌धार्थ और माता का नाम त्रिशला था ।

वर्धमान महावीर ने ज्ञानप्राप्ति हेतु गृह त्याग किया । साढ़े बारह वर्ष तपस्या करने के उपरांत उन्हें ज्ञानप्राप्ति हुई । यह ज्ञान 'केवल' अर्थात 'विशुद्‌ध' स्वरूप का था । अत: उन्हें 'केवली' कहा जाता है । शरीर को सुखदायी अनुभव होनेवाली बातों से होनेवाला आनंद और दुखदायी बातों से होनेवाली पीड़ा का स्वयं पर कुछ भी प्रभाव न होने देना ही विकारों पर विजय प्राप्त करना है । ऐसी विजय उन्होंने प्राप्त की । अत: उन्हें 'जिन' अर्थात 'विजेता' कहा जाने लगा । 'जिन' शब्द से जैन शब्द उत्पन्न होता है । विकारों पर विजय प्राप्त करनेवाले महान वीर । अत: वर्धमान को महावीर कहा जाता है ।

ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात लोगों को धर्म समझाने अथवा धर्म का मार्गदर्शन करने के लिए उन्होंने लगभग तीस वर्षों तक उपदेश किया । लोग धर्म को बड़ी सहजता और सरलता से समझ सकें; इसके लिए वर्धमान महावीर लोगों से लोकभाषा 'अर्धमागधी' में बातचीत करते थे । उनके द्‌वारा बताया गया धर्म शुद्‌ध आचरण पर बल देता है । शुद्‌ध आचरण के लिए उनके बताए हुए मार्ग का सार स्वरूप पंचमहाव्रत और त्रिरत्न में समाविष्ट है । लोगों को उपदेश करते हुए तीर्थंकरों की जो सभाएँ होती थीं; उन्हें अर्धमागधी भाषा में 'समवसरण' कहते थे । ये समवसरण समानता भाव पर आधारित थे । इन समवसरणों में सभी वर्णों के लोगों को प्रवेश था ।

पंच महाव्रत : जिन पाँच नियमों का पालन बड़ी कड़ाई और कठोरता से करना पड़ता है; उन्हें पंच महाव्रत कहते हैं ।

१. अहिंसा : किसी भी सजीव को चोट पहुँचेगी अथवा उसकी हिंसा होगी; ऐसा आचरण न करें ।

२. सत्य : हमेशा सत्य बोलें और सच्चाई के साथ आचरण करें ।

३. अस्तेय : 'स्तेय' शब्द का अर्थ चोरी करना है । दूसरे के स्वामित्व अथवा अधिकार की वस्तु को उसके स्वामी की अनुमति के बिना लेना चोरी करना है । चोरी न करना अर्थात अस्तेय है ।

४. अपरिग्रह : मन में लोभ होने से मनुष्य का झुकाव संपत्ति का संग्रह करने की ओर रहता है । इस प्रकार संग्रह न करना अपरिग्रह कहलाता है ।

५. ब्रह्मचर्य : शरीर को सुखद अनुभव होने वाली बातों का त्याग कर व्रतों का पालन करने को ब्रह्मचर्य कहते हैं ।

त्रिरत्न : १. 'सम्यक् दर्शन', २. 'सम्यक् ज्ञान' और ३. 'सम्यक् चारित्र' ये तीन सिद्‌धांत त्रिरत्न हैं । सम्यक् का अर्थ 'संतुलित' होता है ।

१. सम्यक् दर्शन : तीर्थंकरों द्‌वारा दिए जानेवाले उपदेशों में निहित सत्य को समझना और उसके प्रति श्रद्‌धा रखना ।

२. सम्यक् ज्ञान : तीर्थंकरों द्‌वारा दिए जाने वाले उपदेशों और सिद्‌धांतों का नियमित रूप से अध्ययन करना और उनके सूक्ष्म अर्थों को समझना ।

३. सम्यक् चारित्र : पंच महाव्रतों का कठोरता से आचरण करना ।

उपदेश का सार : महावीर द्‌वारा दिए गए उपदेशों में 'अनेकांतवाद' सिद्‌धांत का उल्लेख होता है । यह सिद्‌धांत सत्य की खोज के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । 'अनेकांत' शब्द में 'अंत' शब्द का अर्थ 'पहलू' अथवा 'अंग' है । सत्य की खोज करते समय विषय के किसी एक अथवा दूसरे पहलू अथवा अंग पर ध्यान देकर निष्कर्ष निकालने पर सत्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता । अत: उस विषय के अनेक पहलुओं अथवा अंगों का विचार करना भी आवश्यक होता है । इस सिद्‌धांत के कारण समाज में अपने विचारों के प्रति दुराग्रह रखने की प्रवृत्ति नहीं रह जाती और दूसरों के विचारों के प्रति सहिष्णुता निर्माण होती है ।

मनुष्य की महानता उसके वर्ण पर नहीं अपितु उसके उत्तम चरित्र पर निर्भर रहती है; यह सीख वर्धमान महावीर ने दी । वैदिक परंपरा में स्त्रियों के लिए ज्ञान प्राप्ति के मार्ग धीरे-धीरे बंद हो गए थे परंतु वर्धमान महावीर ने स्त्रियों को भी संन्यास धारण करने का अधिकार दिया । सभी प्राणियों से प्रेम करो । दूसरों के प्रति अपने मन में दया और करुणा का भाव बनाए रखो । जीयो और जीने दो; यह उपदेश उन्होंने किया ।

५.२ बौद्‌ध धर्म

बौद्‌ध धर्म का प्रचार-प्रसार भारत और भारत के बाहर अनेक देशों में हुआ । गौतम बुद्‌ध बौद्‌ध धर्म के संस्थापक थे ।

गौतम बुद्‌ध (ईसा पूर्व ५६३ ते ईसा पूर्व ४८३)

गौतम बुद्‌ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी वन में हुआ । उनके पिता का नाम शुद्‌धोदन और माता का नाम मायादेवी था । गौतम बुद्‌ध का मूल नाम सिद्‌धार्थ था ।

गौतम बुद्‌ध

उन्हें मानव जीवन का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ था । अत: उन्हें 'बुद्‌ध' कहा गया । मानव जीवन में दु:ख क्यों है ? यह प्रश्न उनके मन में उत्पन्न हुआ । इसका उत्तर खोजने के लिए उन्होंने गृहत्याग किया । वैशाख पूर्णिमा के दिन वे बिहार के गया शहर के निकट ऊरुवेला नामक स्थान पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न बैठे थे । उस समय उन्हें 'बोधि' प्राप्त हुई । बोधि का अर्थ सर्वोच्च ज्ञान है । अब उस पीपल के वृक्ष को 'बोधि वृक्ष' कहते हैं और 'ऊरुवेला' नामक स्थान को 'बोधगया' कहते हैं । गौतम बुद्‌ध ने अपना प्रथम

बोधि वृक्ष

प्रवचन वाराणसी के समीप सारनाथ में दिया । इस प्रवचन में उन्होंने जो उपदेश दिया; उसे 'धम्म' कहते हैं । इस प्रवचन द्‌वारा उन्होंने धम्म के चक्र को गति प्रदान की। अत: इस घटना को पाली भाषा में 'धम्मचक्कपवत्तन' कहते हैं । इसे संस्कृत में धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है । कालांतर में उन्होंने धम्म का उपदेश करने के लिए लगभग पैंतालीस वर्ष चारिका की । चारिका का अर्थ पैदल घूमना है । उन्होंने अपना उपदेश लोकभाषा-पाली में दिया । बौद्‌ध धम्म में बुद्‌ध, धम्म और संघ की शरण में जाने की महत्त्वपूर्ण संकल्पना निहित है । इस संकल्पना को 'त्रिशरण' कहते हैं । उनके द्‌वारा व्याख्यायित धम्म का सार निम्नानुसार है ।

आर्यसत्य : मानव जीवन के सभी व्यवहारों के मूल में चार सत्य हैं । उन्हें आर्यसत्य कहा गया है ।

१. दु:ख : मानव जीवन में दुख है ।

२. दु:ख का कारण : दु:ख का कारण होता है ।

३. दु:ख निवारण : दुखों को समाप्त किया जा सकता है ।

४. प्रतिपद : प्रतिपद का अर्थ मार्ग है । प्रतिपद दुखों का अंत करनेवाला मार्ग है । यह मार्ग शुद्‌ध आचरण का मार्ग है । इस मार्ग को 'अष्टांगिक मार्ग' कहते हैं ।

पंचशील : गौतम बुद्‌ध ने पाँच नियमों का पालन करने के लिए कहा है । इन्हीं नियमों को 'पंचशील' कहते हैं ।

(१) प्राणियों/सजीवों की हत्या करने से दूर रहें ।

(२) चोरी करने से दूर रहें ।

(३) अनैतिक आचरण से दूर रहें ।

(४) असत्य बोलने से दूर रहें ।

(५) नशीले पदार्थों का सेवन करने से दूर रहें ।

बौद्‌ध संघ : अपने धम्म का उपदेश करने के लिए उन्होंने भिक्खुओं का संघ बनाया । गृहस्थ जीवन का त्याग करके संघ में प्रवेश करनेवाले उनके अनुयायियों को 'भिक्खु' कहते थे । बुद्‌ध के समान भिक्खु भी चारिका कर लोगों को धम्म का उपदेश करते थे । स्त्रियों का स्वतंत्र संघ था । उन्हें भिक्खुनी कहते थे । बौद्‌ध धर्म में सभी वर्णों और जातियों के लोगों को प्रवेश था ।

क्या तुम जानते हो ?

अष्टांगिक मार्ग :

१. सम्यक् दृष्टि : चार आर्यसत्यों का ज्ञान होना ।

२. सम्यक् संकल्प : हिंसा आदि बातों का त्याग करना ।

३. सम्यक् वाक वाणी : असत्य, चुगलखोरी, कठोरता और अनर्गल बातें न करना ।

४. सम्यक् कर्म : सजीवों की हत्या, चोरी और दुराचार से दूर रहना ।

५. सम्यक् जीविका : अवैध अथवा अनुचित ढंग से आजीविका चलाने के बदले उचित ढंग से चलाना ।

६. सम्यक् व्यायाम : व्यायाम का अर्थ प्रयत्न करना है । बुरे कर्म उत्पन्न नहीं होने चाहिए; और यदि हों तो उनका त्याग करें, इसी तरह अच्छे कर्म उत्पन्न होने चाहिए; अच्छे कर्म उत्पन्न होने पर उन्हें नष्ट नहीं होने देना चाहिए ; इसके लिए प्रयास करना ।

७. सम्यक् स्मृति : मन एकाग्र करके लोभ आदि विकारों को दूर करना । इसी भाँति अपने चित्त आदि को उचित पद्धति से समझ लेना ।

८. सम्यक् समाधि : एकाग्रता से ध्यान का अनुभव करना ।

उपदेश का सार : गौतम बुद्ध ने मानव बुद्धि की स्वतंत्रता की घोषणा की । वर्ण आदि के आधार पर मान्य विषमता को नकारा । जन्म के आधार पर कोई भी श्रेष्ठ अथवा कनिष्ठ नहीं बन जाता अपितु उसका श्रेष्ठत्व अथवा कनिष्ठत्व उसके आचरण के आधार पर ही सिद्ध होता है । 'नन्हीं-सी चिड़िया भी अपने घोंसले में स्वतंत्रता से चहचहाती है ।' उनका यह कथन विख्यात है और स्वतंत्रता तथा समता जैसे मूल्यों के विषय में उनके चिंतन को दर्शाता है । उन्होंने उपदेश किया कि पुरुषों के समान स्त्रियों को भी स्वयं की उन्नति करने का अधिकार है । यज्ञ जैसे कर्मकांड का विरोध किया । उन्होंने प्रज्ञा, शील आदि मूल्यों का उपदेश किया; जो मानव का कल्याण साध्य करते हैं । सभी प्राणिमात्र के प्रति 'करुणा' उनके व्यक्तित्व की असाधारण विशेषता थी ।

गौतम बुद्ध ने जिस सहिष्णुता का उपदेश किया; वह सहिष्णुता न केवल भारतीय समाज का अपितु संपूर्ण मानव जाति का आज भी पथप्रदर्शन कर रही है ।

लोकायत : प्राचीन काल में प्रचलित लोकायत अथवा चार्वाक नामक दर्शन भी महत्त्वपूर्ण है । इस दर्शन ने स्वतंत्र विचारों पर बल दिया था और वेदों की प्रामाणिकता को नकारा था ।

प्राचीन काल में भारत भूमि में नए-नए धार्मिक विचारों अथवा दर्शनों के स्रोत उत्पन्न होते रहें । कालांतर में ज्यू, ईसाई, इस्लाम और पारसी धर्म भारतीय समाज में घुलमिल गए ।

५.३ ज्यू धर्म (यहूदी धर्म)

ज्यू धर्म के लोग लगभग ई. स. पहली से तीसरी शताब्दी के बीच केरल के कोचीन में आए होंगे । ज्यू धर्म को 'यहूदी' धर्म भी कहा जाता है । ज्यू धर्म के लोग मानते हैं कि ईश्वर एक ही है । ज्यू धर्म न्याय, सत्य, शांति, प्रेम, करुणा, विनम्रता, दान देना, अच्छा बोलना और स्वाभिमान जैसे गुणों की सीख देता है । उनके प्रार्थना स्थानों को 'सिनेगॉग' कहते हैं ।

सिनेगॉग

५.४ ईसाई धर्म

ईसा मसीह (जीजस क्राईस्ट) ने ईसाई धर्म की स्थापना की । यह धर्म संपूर्ण विश्व में फैला हुआ है ।

ईसा मसीह के १२ शिष्यों में से एक सेंट थॉमस थे;जो ई. स. की पहली शताब्दी में केरल में आए थे । उन्होंने केरल के त्रिचूर जिले के पल्लयूर नामक स्थान पर ई. स. ५२ में चर्च की स्थापना की । ईसाई धर्म की सीख के अनुसार ईश्वर एक ही है और वह सभी का स्नेहमयी पिता है । वह शक्तिमान है । ऐसा माना जाता है कि ईसा मसीह ईश्वर के पुत्र हैं और मानव जाति का उद्धार करने हेतु धरती पर आए थे । ईसाई धर्म में बताया गया है कि हम सभी एक-दूसरे के भाई-बहन हैं । हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए । यहाँ तक कि शत्रु से भी प्रेम करना चाहिए । जिनसे अपराध हुआ है; उन्हें क्षमा करनी चाहिए । 'बाईबिल' ईसाई धर्म का पवित्र धर्मग्रंथ है । ईसाई लोगों के प्रार्थना स्थान को 'गिरजाघर' (चर्च) कहते हैं ।

गिरजाघर (चर्च)

५.५ इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद में विश्वास करता है । अल्लाह एक है और मुहम्मद पैगंबर उसके संदेशवाहक हैं । पैगंबर द्वारा ईश्वर का संदेश पवित्र कुरआन धर्मग्रंथ में व्यक्त हुआ है । 'इस्लाम' शब्द का अर्थ 'शांति' होता है । इस शब्द का अर्थ 'अल्लाह की शरण में जाना' भी होता है । इस्लाम में कहा गया है कि अल्लाह शाश्वत और सर्वत्र है । वह सर्व शक्तिमान और परम दयालु है । यह माना जाता है कि अल्लाह की उपासना करना ही मानव जीवन का उद्देश्य है । मनुष्य अपने जीवन में कैसा आचरण करे;इसका मार्गदर्शन पवित्र धर्मग्रंथ 'कुरआन' में किया गया है । प्राचीन समय से भारत और अरबस्तान के बीच व्यापारिक संबंध थे । अरबस्तान के व्यापारी केरल के तटीय बंदरगाहों पर आते थे । ई. स. सातवीं शताब्दी में अरबस्तान में इस्लाम का प्रचार-प्रसार हुआ । उसी शताब्दी में अरब व्यापारियों के माध्यम से भारत में इस्लाम का आगमन हुआ । इस्लाम धर्म के प्रार्थना स्थान को 'मस्जिद' कहते हैं ।

मस्जिद

५.६ पारसी धर्म

प्राचीन समय से पारसी लोग और वैदिक संस्कृति के लोगों के बीच संबंध थे । पारसी धर्म के पवित्र ग्रंथ का नाम 'अवेस्ता' है । 'ऋग्वेद' और 'अवेस्ता' ग्रंथों की भाषाओं में साम्य पाया जाता है । पारसी लोग ईरान के 'पार्स' (पारस) अथवा 'फार्स' (फारस) नामक प्रांतों से भारत में आए । अत: वे 'पारसी' नाम से जाने जाते हैं । सबसे पहले वे गुजरात में आए । कुछ लोगों का मत है कि वे ई. स. की आठवीं शताब्दी में आए होंगे । जरथुस्त्र(जरदुश्त) पारसी धर्म के संस्थापक थे । उनके ईश्वर का उल्लेख 'अहुर मज्द' नाम से किया जाता है । पारसी धर्म में अग्नि और जल तत्त्व को अत्यंत महत्त्व है । उनके मंदिरों में पवित्र अग्नि निरंतर प्रज्ज्वलित रहती है । इन मंदिरों को 'अग्यारी' कहते हैं । पारसी धर्म की विचारधारा के प्रमुख तीन आचरण तत्त्व - उत्तम विचार, उत्तम वाणी और उत्तम कर्म हैं और ये तीन आचरण तत्त्व पारसी धर्म की विचारधारा का सार है ।

अग्यारी

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(१) जैन धर्म में................सिद्धांत को महत्त्व प्राप्त है ।

(२) सभी प्राणिमात्रों के प्रति..........गौतम बुद्‌ध के व्यक्तित्व की असाधारण विशेषता थी ।

२. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) वर्धमान महावीर ने कौन-सी सीख दी ?

(२) गौतम बुद्‌ध का कौन-सा वचन विख्यात है ? उस वचन द्‌वारा कौन-से मूल्य व्यक्त होते हैं ?

(३) ज्यू धर्म की सीख में किन गुणों पर बल दिया गया है ?

(४) ईसाई धर्म में क्या बताया गया है ?

(५) इस्लाम धर्म की सीख क्या कहती है ?

(६) पारसी धर्म की विचारधारा का सार क्या है ?

३. टिप्पणी लिखो :

(१) आर्यसत्य (२) पंचशील

४. नीचे दिए गए पंचमहाव्रतों और त्रिरत्नों का तालिका में वर्गीकरण करके लिखो :

(१) अहिंसा (२) सम्यक् दर्शन (३) सत्य (४) अस्तेय (५) सम्यक् ज्ञान (६) अपरिग्रह (७) सम्यक् चारित्र (८) ब्रह्‌मचर्य

पंचमहाव्रत	त्रिरत्न
(१)................	(१)................
(२)................	(२)................
(३)................	(३)................
(४)................	
(५)................	

५. कारण लिखो :

(१) वर्धमान महावीर को 'जिन' क्यों कहने लगे ?

(२) गौतम बुद्‌ध को 'बुद्‌ध' क्यों कहा गया है ?

उपक्रम :

(१) विभिन्न त्योहारों की जानकारी और चित्रों का संग्रह करो ।

(२) विभिन्न धर्मों के प्रार्थना स्थानों में जाओ और कक्षा में परिसर सैर का वर्णन कथन करो ।

* * *

६. जनपद और महाजनपद

६.१ जनपद
६.२ महाजनपद
६.३ मगध साम्राज्य का उदय

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में सोलह महाजनपदों के नाम लिखो ।

६.१ जनपद

लगभग ईसा पूर्व १००० से ईसा पूर्व ६०० का कालखंड वैदिकोत्तर कालखंड माना जाता है । इस कालखंड में जनपदों का उदय हुआ । ये जनपद ही छोटे-छोटे राज्य थे । भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर में स्थित वर्तमान अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में बिहार, बंगाल, ओडिशा तक के प्रदेश में तथा दक्षिण में महाराष्ट्र तक ये जनपद फैले हुए थे । वर्तमान महाराष्ट्र का कुछ

क्षेत्र तत्कालीन 'अश्मक' नामक जनपद से व्याप्त था । संस्कृत, पाली और अर्धमागधी साहित्य में इन जनपदों के नाम पाए जाते हैं । यूनानी इतिहासकारों के लेखन द्‌वारा भी इनके विषय में जानकारी प्राप्त होती है । उनमें से कुछ जनपदों में राजतंत्र विद्‌यमान था । कुछ जनपदों में गणराज्य थे । जनपदों में अनुभवी व्यक्तियों की 'गणपरिषद' हुआ करती थी । गणपरिषद के पार्षद (सदस्य) एक-दूसरे के साथ विचार-विमर्श करके राज्य प्रशासन से संबंधित निर्णय लेते थे । इस प्रकार का विचार-विमर्श जहाँ होता था; उस सभागार को 'संथागार'कहते थे । गौतम बुद्‌ध शाक्य गणतांत्रिक राज्य से संबंधित थे । प्रत्येक जनपद के अपने-अपने सिक्के थे ।

६.२ महाजनपद

महाजनपद

कोसल

- कोसल महाजनपद का विस्तार हिमालय की तलहटी में नेपाल और उत्तर प्रदेश में हुआ था ।
- इस राज्य के श्रावस्ती, कुशावती और साकेत नगर विख्यात थे ।
- श्रावस्ती कोसल महाजनपद की राजधानी थी ।
- गौतम बुद्‌ध ने श्रावस्ती के प्रसिद्‌ध विहार जेतवन में दीर्घ समय तक निवास किया था।
- कोसल नरेश प्रसेनजित वर्धमान महावीर तथा गौतम बुद्‌ध का समकालीन था ।
- कोसल का राज्य मगध में विलीन हुआ ।

वत्स

- वत्स महाजनपद का विस्तार उत्तर प्रदेश के प्रयाग अर्थात इलाहाबाद के आस-पास के क्षेत्र में हुआ था।
- कोसम अर्थात प्राचीन समय का कौशांबी नगर था ।
- यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था ।
- कौशांबी के तीन अति धनवान व्यापारियों ने गौतम बुद्‌ध और उनके अनुयायियों के लिए तीन विहारों का निर्माण करवाया था ।
- कौशांबी नरेश उदयन गौतम बुद्‌ध का समकालीन था ।
- उदयन राजा के पश्चात वत्स महाजनपद का स्वतंत्र अस्तित्व बहुत समय तक बना नहीं रहा । इस महाजनपद को अवंती महाजनपद के राजा ने जीत लिया ।

अवंती

- मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवंती प्राचीन महाजनपद था ।
- उज्जयिनी (उज्जैन) नगरी अवंती की राजधानी थी ।
- उज्जयिनी महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था ।
- अवंती नरेश प्रद्योत वर्धमान महावीर तथा गौतम बुद्‌ध का समकालीन था ।
- अवंती नरेश नंदीवर्धन के कार्यकाल में अवंती महाजनपद मगध साम्राज्य में विलीन हुआ।

मगध

- बिहार में पटना, गया शहरों के आस-पास के क्षेत्र और बंगाल के कुछ क्षेत्र में प्राचीन मगध महाजनपद था ।
- राजगृह (राजगीर) मगध की राजधानी थी ।
- महागोविंद नामक वास्तुविशारद ने बिंबिसार के राजप्रासाद का निर्माण किया था।
- बिंबिसार के दरबार में जीवक नामक प्रसिद्‌ध वैद्‌य था।
- बिंबिसार ने गौतम बुद्‌ध का शिष्यत्व स्वीकारा था।

कुछ जनपद धीरे-धीरे अधिक बलशाली बन गए । उनकी भौगोलिक सीमाओं का विस्तार हुआ । ऐसे जनपदों को महाजनपद कहा जाने लगा । साहित्य में पाए गए उल्लेखों के आधार पर दिखाई देता है कि ईसा पूर्व छठी शताब्दी तक महाजनपदों में सोलह महाजनपदों को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ था । उनमें भी विशेष रूप से कोसल, वत्स, अवंती और मगध महाजनपद अधिक सामर्थ्यशाली बनते गए ।

६.३ मगध साम्राज्य का उदय

बिंबिसार के बेटे अजातशत्रु ने मगध का विस्तार करने की नीति अपनाई । उसने पूर्व के अनेक गणराज्यों को जीत लिया । अजातशत्रु के कार्यकाल में मगध संपन्न हुआ । उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था । गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अजातशत्रु के शासनकाल में राजगृह नामक स्थान पर बौद्ध धर्म की प्रथम संगिति अर्थात परिषद हुई ।

अजातशत्रु-शिल्प

अजातशत्रु के कार्यकाल में मगध की राजधानी के रूप में पाटलिग्राम की नींव रखी गई । यही पाटलिग्राम कालांतर में पाटलिपुत्र नाम से प्रख्यात हुआ । पाटलिपुत्र वर्तमान पटना शहर के परिसर में होना चाहिए ।

अजातशत्रु के पश्चात मगध के कई राजा हुए । उनमें शिशुनाग विख्यात राजा था । उसने अवंती, कोसल और वत्स राज्यों को मगध से जोड़ा । उत्तर भारत का लगभग संपूर्ण प्रदेश मगध के नियंत्रण में आ गया । इस प्रकार मगध साम्राज्य अस्तित्व में आया ।

मगध साम्राज्य के नंद राजा

ईसा पूर्व ३६४ से ३२४ के कालखंड में मगध साम्राज्य की गद्दी पर नंद राजा सत्तासीन थे । नंद राजाओं ने विशाल साम्राज्य के लिए जिस शासन व्यवस्था की आवश्यकता होती है; उस शासन व्यवस्था की स्थापना की । उनके पास थलसेना, अश्वसेना, रथसेना और गजसेना इस प्रकार चतुरंगिणी सेना थी । उन्होंने माप-तौल की प्रमाणित प्रणाली प्रारंभ की ।

नंद वंश का अंतिम राजा धनानंद था । उसके समय तक मगध साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में पंजाब तक हुआ था । धनानंद के कार्यकाल में महत्त्वाकांक्षी युवक चंद्रगुप्त मौर्य ने पाटलिपुत्र को जीत लिया और नंद राजवंश का अंत करके मौर्य साम्राज्य की स्थापना की ।

अगले पाठ में हम मौर्य साम्राज्य के उदित कालखंड में उन विदेशी आक्रमणों की जानकारी प्राप्त करेंगे; जो भारत के पश्चिमी और पश्चिमोत्तर क्षेत्रों पर हुए थे । साथ ही मौर्य साम्राज्य की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

सोलह महाजनपदों के प्राचीन और आधुनिक नाम :

(१) काशी (बनारस) (२) कोसल (लखनऊ) (३) मल्ल (गोरखपुर) (४) वत्स (इलाहाबाद) (५) चेदि (कानपुर) (६) कुरु (दिल्ली) (७) पांचाल (रुहेलखंड) (८) मत्स्य (जयपुर) (९) शूरसेन (मथुरा) (१०) अश्मक (औरंगाबाद-महाराष्ट्र) (११) अवंती (उज्जैन) (१२) अंग-(चंपा-पूर्व बिहार) (१३) मगध (दक्षिण-बिहार) (१४) वृज्जी(वज्जी) (उत्तर बिहार) (१५) गांधार (पेशावर) (१६) कंबोज (गांधार के समीप)

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) जनपद किसे कहते हैं ?
(२) महाजनपद किसे कहते हैं ?
(३) बौद्ध धर्म की प्रथम परिषद कहाँ हुई ?
(४) माप-तौल की प्रमाणित प्रणाली किसने प्रारंभ की ?

२. बताओ तो :

(१) वर्तमान महाराष्ट्र का कुछ क्षेत्र तत्कालीन इस जनपद द्वारा व्याप्त था ।
(२) जनपदों के वरिष्ठ और अनुभवी व्यक्तियों की होती थी ।
(३) जिस सभागार में विचार-विमर्श होता था; उसे कहा जाता था ।
(४) गौतम बुद्ध गणराज्य के थे ।
(५) चतुरंगिणी सेना ।

३. जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' समूह	'ब' समूह
(१) संगिति	(अ) अजातशत्रु
(२) धनानंद	(ब) परिषद
(३) पाटलिग्राम	(क) महागोविंद
	(ड) नंद राजा

४. भारत के विभिन्न संघ राज्य और उनकी राजधानियों की सूची बनाओ ।

उपक्रम :

(१) अपने परिसर के किले/गढ़ की सैर पर जाओ और निम्न मुद्दों के आधार पर जानकारी प्राप्त करो ।
(१) किले का प्रकार (२) किसके शासनकाल में निर्माण हुआ । (३) किला प्रमुख (४) प्रमुख विशेषता
(२) भारतीय सेना में कौन-कौन-सी सेनाओं का समावेश होता है ?
(३) निम्न तालिका पूर्ण करो ।

अ. क्र.	महाजनपद के राज्य	स्थान	राजधानी	प्रमुख राजा का नाम
१.	---	हिमालय की तलहटी में	---	---
२.	वत्स	---	---	---
३.	---	---	---	प्रद्योत
४.	---	पटना, गया शहरों के आस-पास का क्षेत्र	---	---

* * *

७. मौर्यकालीन भारत

७.१ यूनानी (ग्रीक) सम्राट सिकंदर का आक्रमण ।

७.२ मौर्य साम्राज्य

क्या तुम जानते हो ?

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में ईरान में साइरस नामक राजा ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया था । यह साम्राज्य पश्चिमोत्तर भारत से लेकर रोम तथा अफ्रीका के इजिप्त तक फैला हुआ था । ईसा पूर्व ५१८ के लगभग दारयूश नामक ईरान के सम्राट ने भारत के पश्चिमोत्तर का प्रदेश और पंजाब तक का कुछ क्षेत्र जीत लिया था । दारयूश ने इस प्रदेश के कुछ सैनिकों को अपनी सेना में भरती करवाया था । इन सैनिकों की जानकारी ग्रीक इतिहासकारों के साहित्य द्‌वारा प्राप्त होती है । सम्राट दारयूश के कार्यकाल में भारत और ईरान के बीच राजनीतिक संबंध प्रस्थापित हुए । इससे व्यापार और कला के क्षेत्रों में आदान-प्रदान बढ़ा । सम्राट दारयूश ने अपने साम्राज्य में सर्वत्र 'दारिक' नामक मुद्रा को प्रचलित किया । इससे व्यापार करना सुलभ हुआ । सम्राट दारयूश के कार्यकाल में राजधानी नगरी-पर्सिपोलिस का निर्माण किया गया । पर्सिपोलिस ईरान में है ।

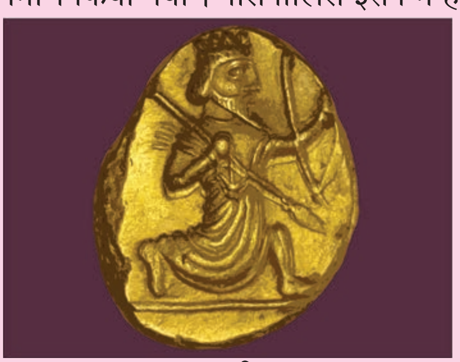

दारिक

७.१ यूनानी सम्राट सिकंदर का आक्रमण

यूनानी सम्राट अलेक्जांडर अर्थात सिकंदर ने ईसा पूर्व ३२६ में भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश पर आक्रमण किया । वह सिंधु नदी लाँघकर तक्षशिला पहुँचा । इस मार्ग पर स्थानीय भारतीय राजाओं ने

सम्राट सिकंदर

उसके साथ घमासान युद्‌ध किए । फिर भी सिकंदर पंजाब तक पहुँचने में सफल रहा । परंतु इस अभियान में उसके सैनिकों को अपार कष्ट सहने पड़े । उन्हें मातृभूमि को लौटने की तीव्र इच्छा हो रही थी । सैनिकों ने सिकंदर के विरुद्‌ध विद्रोह किया । सिकंदर के लिए पीछे हटना आवश्यक हो गया था । भारत के जीते हुए प्रदेशों के प्रबंधन हेतु उसने यूनानी अधिकारियों को नियुक्त किया और उन्हें 'सत्रप' कहा गया । इसके बाद वह लौट गया परंतु बीच रास्ते में बैबीलोन नामक स्थान पर ईसा पूर्व ३२३ में उसकी मृत्यु हुई । यह स्थान वर्तमान इराक में है ।

सिकंदर के आगमन से भारत और पश्चिमी विश्व के बीच व्यापार बढ़ा । सिंकदर के साथ जो इतिहासकार थे; उन्होंने अपने साहित्य द्‌वारा पश्चिमी विश्व को भारत से परिचित कराया । यूनानी मूर्तिकला का भारतीय कला शैली पर प्रभाव पड़ा । इससे जिस शैली का निर्माण हुआ; उसे गांधार शैली कहते हैं । यूनानी राजाओं के सिक्के वैशिष्ट्यपूर्ण होते थे । सिक्के पर एक ओर सिक्के ढालने वाले राजा का चित्र तथा दूसरी ओर किसी यूनानी देवता का चित्र अंकित रहता था । सिक्के पर उस राजा का नाम भी अंकित रहता था । सिकंदर के सिक्के भी ऐसे

सिकंदर का चांदी का सिक्का – दोनों पहलू

ही थे । कालांतर में भारत के राजाओं ने भी ऐसे ही सिक्के ढालना प्रारंभ किया ।

७.२ मौर्य साम्राज्य

चंद्रगुप्त मौर्य : चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की । मगध के नंद राजा धनानंद की अत्याचारी, अन्यायी शासन व्यवस्था से लोग त्रस्त हो गए थे । उसको पराजित कर चंद्रगुप्त मौर्य ने ईसा पूर्व लगभग ३२५ में मगध पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की । उसने अवंती और सौराष्ट्र को जीतकर अपने साम्राज्य को विस्तारित करना प्रारंभ किया । सिकंदर द्वारा नियुक्त सत्रपों के बीच सिकंदर की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए परस्पर युद्ध प्रारंभ हुए । सेल्यूकस निकेटर सिकंदर का सेनापति था । सिकंदर की मृत्यु के बाद वह बैबीलोन का राजा बन बैठा था । उसने पश्चिमोत्तर भारत और पंजाब पर आक्रमण किया । चंद्रगप्त मौर्य ने उसके आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया । सेल्यूकस निकेटर को पराजित करने से अफगानिस्तान के काबुल, कंधार, हेरात प्रदेश उसके साम्राज्य में समाविष्ट हुए ।

क्या तुम जानते हो ?

संस्कृत नाटककार विशाखदत्त ने 'मुद्राराक्षस' नाटक लिखा है । इस नाटक में धनानंद का संहार कर चंद्रगुप्त मौर्य ने अपनी सत्ता किस प्रकार स्थापित की ; इस कथानक को व्यक्त किया है । इस कथानक में आर्य चाणक्य अर्थात कौटिल्य के योगदान को विशेष महत्त्व दिया गया है ।

मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था और चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में रह चुका था । उसके 'इंडिका' ग्रंथ में लिखित यह तत्कालीन लेखन मौर्यकालीन भारत का अध्ययन करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण साधन है ।

गुजरात में जूनागढ़ के समीप सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने 'सुदर्शन' नामक बाँध का निर्माण करवाया था और इस उल्लेख का शिलालेख पाया जाता है ।

क्या तुम जानते हो ?

जैन परंपरा के अनुसार माना जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म का स्वीकार किया था । जीवन के अंतिम समय में उसने राज्यपद का त्याग किया था । अपना शेष जीवन उसने कर्नाटक के श्रवणबेलगोल में व्यतीत किया । वहीं पर उसकी मृत्यु हुई ।

सम्राट अशोक : चंद्रगुप्त द्वारा राज्यपद का त्याग किए जाने के बाद उसका बेटा बिंदुसार मगध का राजा बना । बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात उसका बेटा अशोक ईसा पूर्व २७३ में सत्तासीन हुआ । राजा बनने से पूर्व उसकी नियुक्ति तक्षशिला और उज्जयिनी के राज्यपाल के रूप में की गई थी । राज्यपाल के रूप में कार्य करते समय तक्षशिला में विद्रोह हुआ था और अशोक ने इस विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया था । मगध का सम्राट पद प्राप्त करने के पश्चात उसने कलिंग पर आक्रमण किया । कलिंग राज्य का प्रदेश वर्तमान ओडिशा राज्य में था । सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की ।

सम्राट अशोक के राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर अफगानिस्तान तथा उत्तर दिशा में नेपाल से दक्षिण दिशा में कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश तक, पूर्व दिशा में बंगाल से पश्चिम में सौराष्ट्र तक था ।

कलिंग युद्ध : कलिंग युद्ध में हुए रक्तपात को देखकर अशोक ने पुन: कभी भी युद्ध न करने का निश्चय किया । उसकी दृष्टि से सत्य, अहिंसा, दूसरों के

यह सदैव ध्यान में रखो ।

सम्राट अशोक का संदेश :

- माता-पिता की सेवा करना उत्तम होता है ।
- जिस विजय के कारण प्रेम की भावना बढ़ती है; वही सच्ची विजय है ।

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में सम्राट अशोक के शिलालेख और स्तंभलेख दर्शानेवाले स्थानों को दर्शाओ ।

प्रति दया और क्षमावृत्ति जैसे गुण महत्त्वपूर्ण थे । अशोक ने अपना संदेश लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न स्थानों पर शिलालेख और स्तंभ उकेरवाए । ये लेख ब्राह्मी लिपि में हैं। इन लेखों में उसने स्वयं का उल्लेख 'देवानं पियो पियदसी' (ईश्वर का प्रिय प्रियदर्शी) इस रूप में किया है। राज्याभिषेक होने के आठ वर्षों के पश्चात उसने कलिंग पर विजय प्राप्त की और वहाँ हुए संहार को देखकर उसका हृदय परिवर्तन हुआ; यह उल्लेख उसके एक लेखन में मिलता है ।

सम्राट अशोक के दिल्ली-टोपड़ा के एक लेख में चमगादड़, बंदर, गैंडा आदि का शिकार न करें, जंगल में आग न लगाएँ जैसे कठोर प्रतिबंध लिखकर रखे हुए थे।

सम्राट अशोक

अशोक का धर्मप्रसार कार्य : अशोक ने स्वयं बौद्ध धर्म स्वीकार किया था । उसने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की तीसरी परिषद का आयोजन किया था । बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु अशोक ने अपने बेटे महेंद्र और बेटी संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था । दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के देशों में भी धर्मप्रसार हेतु बौद्ध भिक्षुओं को भेजा था । उसने अनेक स्तूपों और विहारों का निर्माण करवाया ।

अशोक के लोककल्याणकारी कार्य : अशोक ने प्रजा को सुख-सुविधा उपलब्ध कराने पर बल दिया । जैसे- लोगों को तथा पशुओं को नि:शुल्क औषधि मिले, ऐसी सुविधा उपलब्ध करवाई । अनेक सड़कों का निर्माण करवाया । छाँव के लिए सड़कों के दोनों ओर पेड़ लगवाए । धर्मशालाओं का निर्माण करवाया । कुएँ खुदवाएँ ।

करके देखो ।

अपने परिसर में कौन-कौन-सी संस्थाएँ कौन-कौन-से लोककल्याणकारी कार्य करती हैं; इसका प्रतिवेदन तैयार करो । .

मौर्यकालीन राज्य प्रशासन : मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी । राज्य प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से साम्राज्य के चार विभाग बनाए गए थे । प्रत्येक विभाग की स्वतंत्र राजधानी थी ।

१. पूर्व विभाग - तोशाली (ओडिशा),

२. पश्चिम विभाग - उज्जयिनी (मध्य प्रदेश),

३. दक्षिण विभाग - सुवर्णगिरि (कर्नाटक में कनकगिरि),

४. उत्तर विभाग - तक्षशिला(पाकिस्तान)

राज्य प्रशासन को लेकर राजा को सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद हुआ करती थी । विभिन्न स्तरों पर कार्य करने वाले अनेक अधिकारी थे । इन सभी का पर्यवेक्षण करने और शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखने हेतु बहुत सक्षम गुप्तचर विभाग था ।

मौर्यकालीन जनजीवन : मौर्य कालखंड में कृषि उत्पादन को बहुत महत्त्व था । कृषि के साथ-साथ व्यापार तथा अन्य उद्योग भी बहुत समृद्ध हुए थे । हस्तिदंत पर उकेरने का कार्य, कपड़ा बुनना और रँगना, धातुकार्य जैसे कई व्यवसाय चलते थे । चमकवाले काले रंग के मिट्टी के बरतन बनाए जाते थे । जलपोतों का निर्माण भी बड़ी मात्रा में चलने वाला उद्योग था ।

धातुकार्य में अनेक धातुओं के साथ लोहे की वस्तुएँ बनाने की तकनीक विकसित हुई थी ।

नगरों और गाँवों में तीज-त्योहार, उत्सव संपन्न होते थे । उनमें लोगों के मनोरंजन के लिए नृत्य-गायन के कार्यक्रम होते थे । दंगल, रथों की दौड़ लोकप्रिय खेल थे । पाँसों के खेल और शतरंज जैसे खेल बड़ी रुचि से खेले जाते थे । शतरंज को 'अष्टपद' के नाम से जाना जाता था ।

स्तंभशीर्ष

मौर्यकालीन कला और साहित्य : सम्राट अशोक के कार्यकाल में शिल्पकला को प्रोत्साहन मिला ।

क्या तुम जानते हो ?

भारत की राजमुद्रा सारनाथ में निर्मित अशोक स्तंभ के आधार पर बनाई गई है । सारनाथ में निर्मित इस मूल स्तंभ पर चार सिंह हैं । प्रत्येक सिंह की प्रतिमा के नीचे आड़ी पट्टी पर चक्र है । उनमें से हमें एक ही चक्र पूरी तरह से दिखाई देता है । चक्र के एक ओर अश्व(घोड़ा) तथा दूसरी ओर वृषभ(बैल) अंकित हैं । राजमुद्रा की जो दिशा दिखाई नहीं देता; उस दिशा पर इसी भाँति हाथी और सिंह अंकित हैं ।

अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ भारतीय शिल्पकला के उत्तम नमूने हैं । उसके द्वारा निर्मित स्तंभों पर सिंह, हाथी और बैल जैसे पशुओं के अत्यंत उत्तम शिल्प हैं । सारनाथ में निर्मित अशोक स्तंभ पर अंकित चक्र भारत के राष्ट्रध्वज पर दिखाई देता है । इस स्तंभ पर चारों ओर सिंह अंकित हैं । परंतु सामने से देखते समय उनमें से तीन सिंह ही दिखाई देते हैं । यह भारत की राजमुद्रा है । अशोक के कालखंड में उकेरी गईं बराबार टीलों की गुफाएँ प्रसिद्‌ध हैं । ये गुफाएँ बिहार में हैं । भारत की गुफाओं में यह गुफा सबसे प्राचीन गुफा है ।

सम्राट अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य का ह्रास प्रारंभ हुआ । मौर्य कालखंड के बाद भारत में

बराबार की गुफाएँ

अनेक राज्य उदित हुए । कुछ साम्राज्यों का भी उदय हुआ । मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का सब से विशाल साम्राज्य था । मौर्य कालखंड के बाद घटित राजनीतिक एवं सामजिक घटनाओं को हम अगले पाठ में समझेंगे ।

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो ।

(१) सत्रपों में परस्पर युद्ध क्यों प्रारंभ हुए?

(२) अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु किसे श्रीलंका भेजा?

(३) मौर्य कालखंड में कौन-से व्यवसाय चलते थे?

(४) सम्राट अशोक द्वारा स्थापित स्तंभों पर किन पशुओं के शिल्प हैं ?

२. बताओ तो:

(१) सत्रप

(२) सुदर्शन

(३) 'देवानं पियो पियदसी'

(४) अष्टपद

३. याद करो और लिखो :

(१) चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य की व्याप्ति ।

(२) सम्राट अशोक के साम्राज्य की व्याप्ति ।

४. जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' समूह	'ब' समूह
(१) सम्राट अलेक्जांडर	(अ) सेक्यूलस निकेटर का राजदूत
(२) मेगस्थनीज	(ब) यूनानी सम्राट
(३) सम्राट अशोक	(क) रोम का सम्राट
	(ड) मगध का सम्राट

५. तुम्हें क्या लगता है?

(१) अंतत: सिकंदर को पीछे हटना पड़ा ।

(२) यूनानी राजाओं के सिक्के वैशिष्ट्यपूर्ण होते थे?

(३) सम्राट अशोक ने कभी भी युद्ध न करने का निश्चय किया ।

६. अपने शब्दों में वर्णन करो :

(१) सम्राट अशोक के लोककल्याणकारी कार्य ।

(२) मौर्यकालीन मनोरंजन और खेल के साधन ।

७. आज युआन श्वांग जैसे विदेशी यात्री यदि तुमसे मिलेंगे तो तुम क्या करोगे ?

उपक्रम :

(१) तुम्हारे परिसर में जनप्रतिनिधियों द्वारा किए गए लोककल्याणकारी कार्यों की जानकारी प्राप्त करो और उनको विस्तार में लिखो ।

(२) सम्राट अशोक के जीवन की अधिक जानकारी प्राप्त करो और नाट्यीकरण द्वारा उस जानकारी को कक्षा में प्रस्तुत करो ।

* * *

८. मौर्य साम्राज्योत्तर राज्य

८.१ शुंग वंश
८.२ इंडो-यूनानी राजा
८.३ कुषाण राजा
८.४ गुप्त राजवंश
८.५ वर्धन राजवंश
८.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

८.१ शुंग वंश

सम्राट अशोक के पश्चात मौर्य सत्ता की सामर्थ्य कम होती गई । अंतिम मौर्य नरेश का नाम बृहद्रथ था । मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने विद्रोह करके बृहद्रथ की

हत्या की और वह स्वयं राजा बन बैठा ।

८.२ इंडो-यूनानी (ग्रीक) राजा

इस कालखंड में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर प्रदेश में यूनानी राजाओं के छोटे-छोटे राज्य थे । उन राजाओं को 'इंडो-यूनानी राजा' कहते थे । प्राचीन भारतीय सिक्कों के इतिहास में इन राजाओं के सिक्के बहुत महत्त्व रखते हैं । एक ओर राजा का चित्र और दूसरी ओर देवता का चित्र; इस रूप में सिक्के ढालने की उनकी परंपरा थी । यह परंपरा कालांतर में भारत में भी प्रचलित हुई । इंडो-यूनानी राजाओं में विख्यात राजा मिनैंडर था । उसने बौद्ध भिक्खु नागसेन के साथ बौद्ध दर्शन पर शास्त्रार्थ किया था । मिनैंडर से तात्पर्य मिलिंद है । उसने भिक्खु नागसेन से पूछे प्रश्नों में से 'मिलिंदपञ्ह' ग्रंथ की निर्मिति हुई । पाली भाषा में 'पञ्ह' शब्द का अर्थ 'प्रश्न' होता है ।

मिनैंडर का चांदी का सिक्का-दोनों पहलू

८.३ कुषाण राजा

भारत में विभिन्न लोगों की टोलियाँ बाहर से निरंतर आती रहीं । उनमें मध्य एशिया से 'कुषाण' नाम की टोलियाँ आई थीं । ई. स. की पहली शताब्दी में उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश और कश्मीर में अपना राज्य प्रस्थापित किया । भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ कुषाण राजाओं ने किया । सिक्कों पर गौतम बुद्ध और विविध भारतीय देवताओं की प्रतिमाओं का उपयोग करने की प्रथा कुषाण राजाओं ने प्रारंभ की । कुषाण राजा कनिष्क ने साम्राज्य का विस्तार किया ।

सम्राट कनिष्क : कनिष्क का साम्राज्य पश्चिम में काबुल से लेकर पूर्व में वाराणसी तक फैला हुआ था । कनिष्क के सोने और तांबे के सिक्के पाए गए हैं । कनिष्क के कालखंड में बौद्ध धर्म की चौथी परिषद कश्मीर में आयोजित की गई थी । कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर नामक शहर बसाया था । श्रीनगर के समीप काम्पुर नाम का गाँव ही कनिष्कपुर होना चाहिए । कनिष्क के कालखंड में अश्वघोष नामक कवि हुआ । उसने 'बुद्धचरित' और 'वज्रसूचि' ग्रंथ लिखे । कनिष्क के दरबार में प्रसिद्ध वैद्य चरक था ।

कनिष्क का सोने का सिक्का-दोनों पहलू

क्या तुम जानते हो ?

कनिष्क का सोने का सिक्का : यह सिक्का सम्राट कनिष्क ने ढाला था । इस सिक्के के दर्शनीय हिस्से पर (मुख्य पक्ष) यूनानी लिपि में 'शाओ नानो शाओ कनेष्की कोशानो' लिखा हुआ है । इसका अर्थ 'राजाधिराज कनिष्क कुषाण' है । सिक्के के पिछले हिस्से पर गौतम बुद्ध की प्रतिमा अंकित है और बगल में यूनानी लिपि में 'बोद्दो' अर्थात बुद्ध लिखा हुआ है ।

८.४ गुप्त राजवंश

ई. स. की तीसरी शताब्दी के अंत में उत्तर भारत में गुप्त राजवंश की सत्ता का उदय हुआ । लगभग तीन शताब्दियों तक गुप्त राजवंश सत्ता में था । गुप्त राजवंश के संस्थापक का नाम 'श्रीगुप्त' था । गुप्त राजवंश में समुद्रगुप्त तथा चंद्रगुप्त द्‌वितीय विशेष रूप स उल्लेखनीय सम्राट थे ।

समुद्रगुप्त : गुप्त राजा चंद्रगुप्त प्रथम के कार्यकाल में गुप्तों के राज्य विस्तार का प्रारंभ हुआ । उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने आस-पास के राजाओं को पराजित करके इस विस्तार को और अधिक बढ़ाया । उसके कार्यकाल में गुप्त सत्ता असम से पंजाब तक फैली हुई थी । उसने तमिलनाडु के कांची तक का पूर्व तटीय प्रदेश भी जीत लिया था । समुद्रगुप्त के इस विजयी अभियान से उसकी सत्ता की धाक सर्वत्र बढ़ गई थी । परिणामत: पश्चिमोत्तर राजाओं और श्रीलंका के राजाओं ने भी उसके साथ मित्रता की संधि कर ली थी । प्रयाग के स्तंभ लेख में समुद्रगुप्त का पराक्रम तथा उसके द्‌वारा पाई गई विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है । यह लेख 'प्रयागप्रशस्ति' के रूप में विख्यात है । इसे 'इलाहाबाद प्रशस्ति' भी कहा जाता है। समुद्रगुप्त वीणा वादन में प्रवीण था । समुद्रगुप्त ने विभिन्न प्रतिमाओंवाले सिक्के ढाले थे । उनमें एक सिक्का ऐसा है; जिसमें वह स्वयं वीणा बजाते हुए दिखाई देता है । उसपर 'समुद्रगुप्त' शब्द अंकित है ।

समुद्रगुप्त का सोने का सिक्का - दोनों पहलू

चंद्रगुप्त दूसरा (द्‌वितीय) : चंद्रगुप्त द्‌वितीय समुद्रगुप्त का बेटा था । उसने गुप्त साम्राज्य को पश्चिमोत्तर में बढ़ाया । उसने मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र जीत लिये । चंद्रगुप्त द्‌वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के रुद्रसेन द्‌वितीय से कराया । इस तरह दक्षिण की बलशाली वाकाटक सत्ता के साथ संबंध बना लिये। दिल्ली के निकट महरौली में एक लौहस्तंभ है । यह लौहस्तंभ डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है । फिर भी उसमें जंग नहीं लगा है । यह लौहस्तंभ प्राचीन भारतीयों द्‌वारा तकनीक में की गई उन्नति का प्रतीक है । इस लौहस्तंभ पर अंकित लेख में 'चंद्र' नामक राजा के उल्लेख के आधार पर यह माना जाता है कि यह लौहस्तंभ चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कालखंड का है । चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में बौद्‌ध भिक्खु 'फाहियान' चीन से भारत में आया था । उसने अपनी भारत यात्रा का वर्णन लिख रखा है । उसमें गुप्त साम्राज्य की उत्तम राज्य प्रशासन

क्या तुम जानते हो ?

भारत में चीनी यात्री-फाहियान चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में आया था । अपने यात्रा वर्णन में उसने गुप्तकालीन समाज जीवन को चित्रित किया है । वह कहता है, भारत में बड़े- बड़े और समृद्‌ध नगर हैं । इन नगरों में यात्रियों के लिए अनेक धर्मार्थ संस्थाएँ भी हैं । नगरों में अस्पताल हैं । वहाँ निर्धनों के लिए नि:शुल्क वैद्‌यकीय सेवाएँ उपलब्ध होती हैं । भव्य विहार और मंदिर हैं । लोगों को व्यवसाय चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता है । लोगों के कहीं भी जाने पर प्रतिबंध नहीं लगा हुआ है । सरकारी अधिकारियों एवं सैनिकों को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है । यहाँ के लोग शराब का सेवन नहीं करते । हिंसा नहीं करते । गुप्त राज्य प्रशासन सुचारु रूप से चलाया जाता है ।

की जानकारी मिलती है ।

८.५ वर्धन राजवंश

गुप्त साम्राज्य का प्रभाव कम होने पर उत्तर भारत में कई राज्यों का उदय हुआ । उनमें से एक वर्धन राजवंश था । दिल्ली के निकट थानेसर नामक स्थान पर प्रभाकर वर्धन नाम का राजा राज्य करता था । उसने वर्धन राजवंश की स्थापना की । हर्षवर्धन उसका बेटा था । हर्षवर्धन ने वर्धन साम्राज्य का विस्तार किया । उसके कार्यकाल में वर्धन साम्राज्य का विस्तार उत्तर में नेपाल, दक्षिण में नर्मदा नदी, पूर्व में असम और पश्चिम में गुजरात तक हुआ था । प्राचीन असम को कामरूप कहते हैं । वहाँ का राजा भास्कर वर्मन से उसके मित्रता के संबंध थे । हर्षवर्धन ने अपना राजदूत चीनी दरबार में भेजा था । हर्षवर्धन ने चीन के सम्राट के साथ मित्रता के संबंध प्रस्थापित किए थे । उसने अपनी राजधानी कन्नौज में प्रस्थापित की । उसके कार्यकाल में व्यापार में समृद्धि हुई । हर्षवर्धन राज्य की आय का बहुत बड़ा हिस्सा प्रजा के हितों के लिए उपयोग में लाता था । प्रत्येक पाँच वर्षों में वह अपनी संपूर्ण संपत्ति प्रजा में दान कर देता था ।

हर्षवर्धन के दरबार में राजकवि बाणभट्ट था । उसने हर्षवर्धन के जीवन पर 'हर्षचरित' ग्रंथ लिखा । उसी के आधार पर हर्षवर्धन के कार्यकाल की जानकारी प्राप्त होती है । हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म का स्वीकार किया था । उसने अन्य धर्मों को भी उदार प्रश्रय दिया था । हर्षवर्धन ने तीन संस्कृत नाटक 'रत्नावली', 'नागानंद' और 'प्रियदर्शिका' लिखे । उसके समय में युआन श्वांग नामक बौद्ध भिक्खु चीन से भारत आया था । उसने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । वह नालंदा विश्वविद्यालय में दो वर्ष रहा था । चीन में जाने के पश्चात उसने बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया ।

८.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर प्रदेश की उलूपी राजकन्या का विवाह अर्जुन के साथ हुआ था । यह कथा महाभारत में उल्लिखित है । ई. स. चौथी शताब्दी

युआन श्वांग

क्या तुम जानते हो ?

युआन श्वांग ने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । उसने महाराष्ट्र के लोगों के बारे में बड़े गौरवपूर्ण शब्द कहे हैं । वह कहता है-महाराष्ट्र के लोग स्वाभिमानी हैं । उनपर कोई उपकार करे तो वे सदैव उस उपकार को याद रखते हैं परंतु यदि कोई उनका अपमान करे तो वे उसे छोड़ते नहीं हैं । अपने प्राणों की परवाह न कर वे संकटग्रस्तों की सहायता करते हैं । शरणागत के साथ विश्वासघात नहीं करते ।

नालंदा विश्वविद्यालय

में 'कामरूप' राज्य का उदय हुआ । पुष्यवर्मन कामरूप राज्य का संस्थापक था । इसका उल्लेख इलाहाबाद में समुद्रगुप्त द्‌वारा निर्मित स्तंभलेख में मिलता है । कामरूप राजाओं के अनेक उकेरे हुए लेख पाए जाते हैं । महाभारत और रामायण महाकाव्यों में कामरूप का उल्लेख 'प्राग्ज्योतिष' नाम से हुआ है । प्राग्ज्योतिषपुर उस राज्य की राजधानी थी । प्राग्ज्योतिषपुर से तात्पर्य वर्तमान असम राज्य के गुवाहाटी शहर से है । 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' पुस्तक में उसका उल्लेख 'किरहादिया' अर्थात 'किरात लोगों का प्रदेश' रूप में किया गया है । कामरूप राज्य का विस्तार ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी, भूटान, बंगाल के कुछ क्षेत्र और बिहार के कुछ हिस्से में हुआ था । पूर्वोत्तर भारत के 'कामरूप राज्य' में युआन श्वांग गया था । उस समय भास्कर वर्मन वहाँ का राजा था ।

इस पाठ में हमने मौर्योत्तर कालखंड में उत्तर भारत और वहाँ की विभिन्न राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त किया । साथ ही हमने यह भी देखा कि उस समय पूर्वोत्तर भारत में क्या परिस्थिति थी । अगले पाठ में हम समकालीन दक्षिण भारत की राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त करेंगे ।

क्या तुम जानते हो ?

भारतीय परंपरा के अनुसार प्राचीन समय में कश्मीर का नाम 'कश्यपपुर' था । यूनानी इतिहासकारों ने कश्यपपुर का उल्लेख कैस्पैपिरास, कैस्पैटिरोक और कैस्पेरिया के रूप में किया है । महाभारत के समय में वहाँ कंबोज राजवंश के राजा राज्य करते थे । सम्राट अशोक के कार्यकाल में कश्मीर मौर्य साम्राज्य में विलीन हुआ था । ई. स. सातवीं शताब्दी में कश्मीर में कर्कोट राजवंश का राज्य था । कल्हण ने अपने राजतरंगिणी ग्रंथ में इसकी जानकारी दी है ।

स्वाध्याय

१. बताओ तो :

(१) भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ करनेवाले राजा ।

(२) कनिष्क द्‌वारा कश्मीर में बसाया गया शहर ।

(३) वीणा वादन में प्रवीण राजा ।

(४) कामरूप से तात्पर्य ।

२. पाठ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण करके गुप्त साम्राज्य के आधुनिक शहरों के नामों की सूची बनाओ :

३. विचार-विमर्श करो और लिखो :

(१) सम्राट कनिष्क

(२) महरौली का लौहस्तंभ

४. पाठ में उल्लिखित विभिन्न ग्रंथों और ग्रंथकारों के नामों की सूची बनाओ :

५. गुप्त राजवंश और वर्धन राजवंश की तुलनात्मक तालिका निम्न मुद्‌दों के आधार पर तैयार करो :

मुद्‌दे	गुप्त राजवंश	वर्धन राजवंश
संस्थापक		
राज्यविस्तार		
कार्य		

६. शब्द पहेली हल करो :

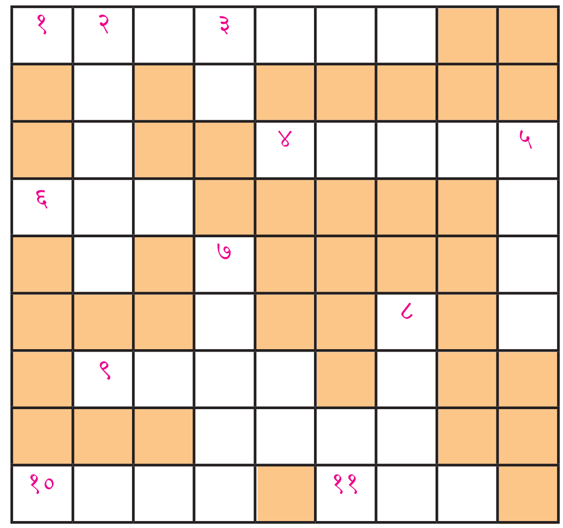

खड़े शब्द

२. ★★★★★ के पराक्रम का वर्णन प्रयाग के स्तंभलेख में पाया जाता है ।

३. महरौली के लौहस्तंभ पर ★★ नाम के राजा का उल्लेख पाया जाता है ।

५. पुष्यवर्मन ने ★★★★ का राज्य स्थापित किया ।

७. बाणभट्‌ट ★★★★★ के दरबार में राजकवि था ।

८. इंडो-यूनानी राजाओं में ★★★★ प्रसिद्‌ध राजा था ।

आड़े शब्द

१. ★★★★★★★ ने गुप्त साम्राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर में किया ।

४. हर्षवर्धन का एक संस्कृत नाटक ★★★★★

६. गुप्त राजवंश का संस्थापक ★★★ था ।

९. ★★★★ का विवाह वाकाटक राजवंश के रुद्रसेन द्‌वितीय से हुआ ।

१०. चंद्रगुप्त द्‌वितीय के कार्यकाल में भारत में ★★★★ बौद्‌ध भिक्खु आया था ।

११. कनिष्क के दरबार में ★★★ प्रसिद्‌ध वैद्‌य था ।

उपक्रम :

मौर्य साम्राज्य के पश्चात भारत में अनेक शासक हुए । उनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो और तुम्हें उत्तम लगनेवाले राजा की भूमिका का अभिनय कक्षा में प्रस्तुत करो ।

* * *

९. दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य

९.१ चेर, पांड्य और चोल राजवंश
९.२ सातवाहन राजवंश
९.३ वाकाटक राजवंश
९.४ चालुक्य राजवंश
९.५ पल्लव राजवंश
९.६ राजकूट राजवंश

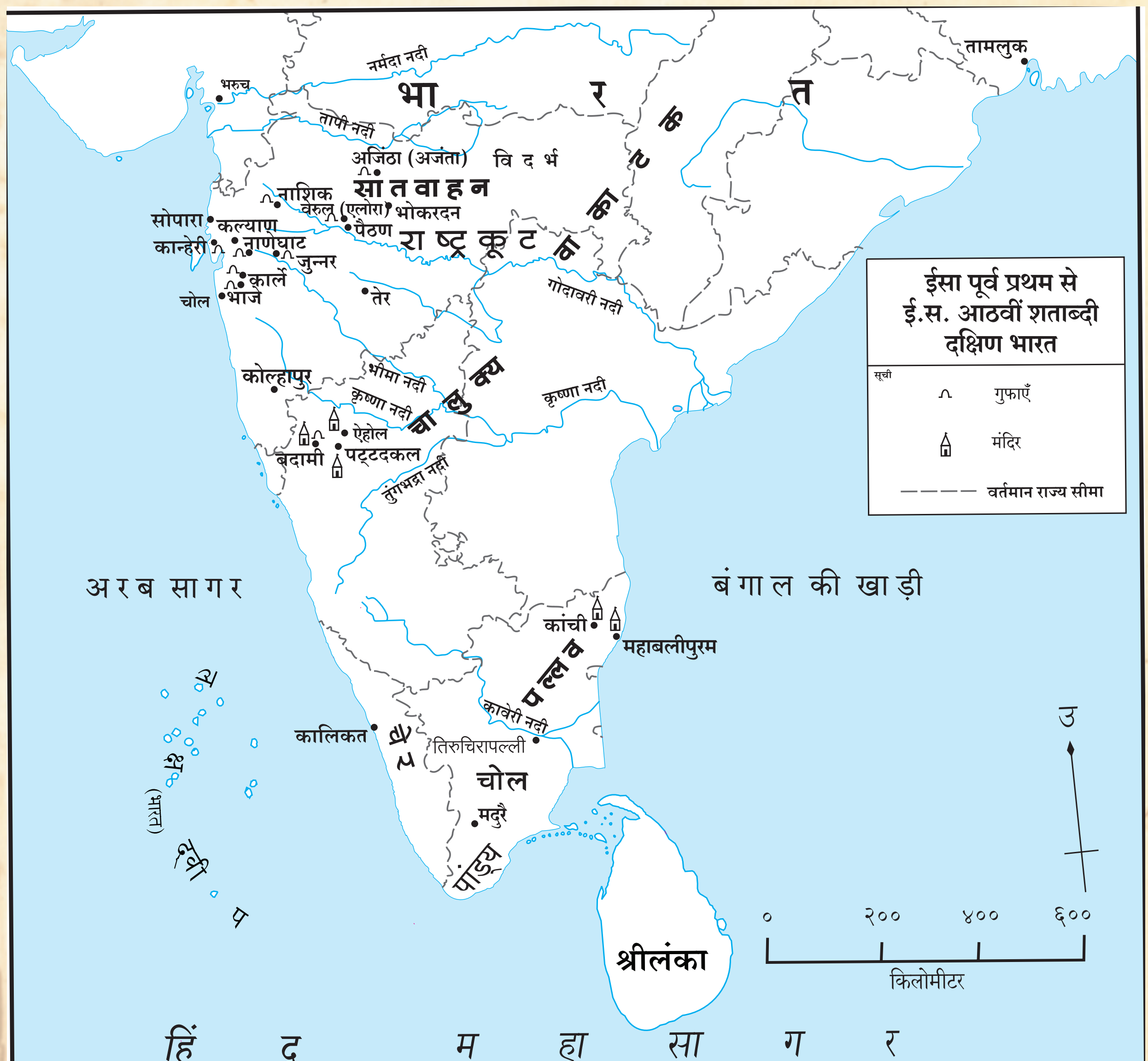

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में दक्षिण भारत के महत्वपूर्ण स्थानों को दर्शाओ ।

९.१ चेर, पांड्य और चोल राजवंश

दक्षिण की प्राचीन राजसत्ताओं में तीन राजसत्ताओं का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में आता है । चेर, पांड्य

और चोल ये वे राजसत्ताएँ हैं । ये राजसत्ताएँ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी अथवा उसके पहले से ही अस्तित्व में थीं । उनका उल्लेख रामायण, महाभारत महाकाव्यों में किया गया है । तमिल भाषा के संघम (संगम) साहित्य में इन तीन राजसत्ताओं का उल्लेख मिलता है । मौर्य सम्राट अशोक के लेखों में भी उनका उल्लेख प्राप्त होता है । 'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' पुस्तक में 'मुजिरीस'(मुजिरिम) बंदरगाह का उल्लेख मिलता है और इस बंदरगाह को केरल तट का अत्यंत महत्त्वपूर्ण बंदरगाह बताया गया है । यह बंदरगाह चेर राज्य में था । मुजिरीस (मुजिरिम) बंदरगाह से मसाले के पदार्थ, मोती, मूल्यवान रत्न आदि वस्तुओं का इटली के रोम और पश्चिम के अन्य देशों में निर्यात होता था । पांड्य राज्य का विस्तार वर्तमान तमिलनाडु में था । वहाँ के उत्कृष्ट श्रेणी के मोतियों की बहुत माँग थी । मदुरै पांड्य राज्य की राजधानी थी । प्राचीन चोलों का राज्य तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के आस-पास के प्रदेश में था ।

९.२ सातवाहन राजवंश

मौर्य साम्राज्य का ह्रास होने के पश्चात उत्तर भारत की भाँति महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक राज्यों के स्थानीय राजा स्वतंत्र बने । उन्होंने छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए । उनमें से एक सातवाहन राजवंश था । प्रतिष्ठान अर्थात पैठण उनकी राजधानी थी । राजा सिमुक सातवाहन राजवंश का संस्थापक था । पुणे जिले के जुन्नर के समीप नाणेघाट की गुफाएँ हैं । इन गुफाओं में उकेरे गए लेखों में इस राजवंश के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम हैं । कुछ सातवाहन राजा अपने नाम से पहले माता का नाम लगाते थे । जैसे-गौतमीपुत्र सातकर्णी ।

सातवाहन राजवंश में गौतमीपुत्र सातकर्णी राजा विशेष ख्यातिप्राप्त है । उसके पराक्रम का वर्णन नाशिक की गुफाओं में उकेरे हुए लेखों में किया गया है । उसने शक राजा नहपान को पराजित किया था ।

क्या तुम जानते हो?

नाणेघाट : पुणे और ठाणे जिले की सीमा पर (जुन्नर-मुरबाड़ मार्ग)घाट सड़क है । यह घाट सड़क 'नाणेघाट' नाम से जानी जाती है । इस घाट सड़क की दूरी

पाँच किलोमीटर है और लगभग दो हजार वर्ष पूर्व सातवाहनों के कार्यकाल में बनाई गई है। पहले यह घाट सड़क देश (महाराष्ट्र का पठारी क्षेत्र) और कोकण के बीच प्रमुख व्यापारी मार्गों में से एक थी । इस घाट सड़क का उपयोग व्यापार एवं यातायात के लिए किया जाता था । उकेरा हुआ बड़ा घड़ा आज भी वहाँ देखने को मिलता है । नाणेघाट की गुफाओं में सातवाहन राजाओं की मूर्तियाँ और शिलालेख पाए जाते हैं तथा इन शिलालेखों में सातवाहन राजाओं एवं रानियों द्वारा दिए गए दानों और चंदों का वर्णन मिलता है ।

नाशिक के लेख में गौतमीपुत्र का उल्लेख 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' के रूप में किया गया है । तोय का अर्थ जल है । घोड़े राजा के वाहन हैं । ऊपरी पदवी का अर्थ यह होता है - 'जिसके घोड़ों ने तीनों समुद्रों का पानी पिया है । तीन समुद्रों से तात्पर्य अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर हैं । उसके कार्यकाल में सातवाहनों का साम्राज्य उत्तर में नर्मदा नदी से दक्षिण में तुंगभद्रा नदी तक फैला हुआ था ।

हाल नाम के सातवाहन राजा का 'गाथासप्तशती' ग्रंथ प्रसिद्ध है । यह ग्रंथ प्राकृत भाषा माहाराष्ट्री में रचित है । इस ग्रंथ में सातवाहनों के समय के जनजीवन की जानकारी मिलती है ।

सातवाहन कालखंड में भारत के व्यापार में बहुत वृद्धि हुई । महाराष्ट्र के पैठण, तेर, भोकरदन, कोल्हापुर को व्यापारिक केंद्र के रूप में विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ । इस कालखंड में वहाँ असंख्य कला वस्तुओं का उत्पादन होने लगा । भारतीय माल का निर्यात रोम तक होता था । कुछ सातवाहन सिक्कों पर जहाजों की

प्रतिमाएँ अंकित हैं । महाराष्ट्र के अजिंठा (अजंता), नाशिक,कार्ले, भाजे, कान्हेरी, जुन्नर की गुफाओं में से कुछ गुफाओं का खनन सातवाहन के समय में किया गया है ।

जहाज की प्रतिमा अंकित सातवाहन का सिक्का

कार्ले का चैत्यगृह

९.३ वाकाटक राजवंश

ई. स. की तीसरी शताब्दी के प्रारंभ में सातवाहनों की सत्ता क्षीण हो गई । सातवाहनों के बाद जिन राजसत्ताओं का उदय हुआ; उनमें वाकाटक सामर्थ्यशाली राजवंश था । वाकाटक राजवंश के संस्थापक का नाम 'विंध्यशक्ति' था । विंध्यशक्ति के बाद प्रवरसेन प्रथम राजा बना । प्रवरसेन के बाद वाकाटकों का राज्य बँट गया । उनमें दो शाखाएँ प्रमुख थीं । प्रथम शाखा की राजधानी नंदीवर्धन (नागपुर के समीप) थी । दूसरी शाखा की राजधानी वत्सगुल्म अर्थात वर्तमान वाशिम (वाशिम जिला) थी । विंध्यशक्ति के बेटे-प्रवरसेन प्रथम ने वाकाटक साम्राज्य का विस्तार किया । उसके कार्यकाल में वाकाटकों का साम्राज्य उत्तर में मालवा और गुजरात प्रदेश से लेकर दक्षिण में कोल्हापुर तक फैला हुआ था । उस समय कोल्हापुर का नाम 'कुंतल' था । गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय की बेटी प्रभावती का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन से हुआ था; यह जानकारी हमने इससे पूर्व प्राप्त की है । वाकाटक राजा हरिषेण का वराहदेव नामक मंत्री था । वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था । अजिंठा गुफाओं में १६ क्रमांक की

अजिंठा (अजंता) की एक गुफा

गुफा का खनन उसने करवाया था । अजिंठा की अन्य कुछ गुफाओं में खुदाई तथा उन गुफाओं के चित्रों से सुशोभित करने का कार्य हरिषेण के कार्यकाल में हुआ । वाकाटक राजा प्रवरसेन द्वितीय ने प्राकृत

अजिंठा (अजंता) में बोधिसत्त्व पद्मपाणि

भाषा 'माहाराष्ट्री' में 'सेतुबंध' ग्रंथ की रचना की। इसी भाँति कालिदास द्‌वारा रचित 'मेघदूत' काव्य भी इसी कालखंड की रचना है ।

९.४ चालुक्य राजवंश

कर्नाटक के चालुक्य राजवंश की सत्ता बलशाली थी । वाकाटकों के बाद प्रबल हुई राजसत्ताओं में कदंब, कलचुरी आदि सत्ताओं का समावेश था । परंतु इन सभी पर चालुक्य राजाओं ने वर्चस्व प्रस्थापित किया । ई. स. की छठी शताब्दी में पुलकेशिन (पुलकेशी) प्रथम ने चालुक्य राजवंश की स्थापना की । कर्नाटक में बदामी उसकी राजधानी थी । बदामी का प्राचीन नाम 'वातापि' था । चालुक्य राजा पुलकेशिन (पुलकेशी) द्‌वितीय ने सम्राट हर्षवर्धन के आक्रमण को विफल बनाया था । बदामी, ऐहोले, पट्‌टदकल में प्रसिद्‌ध मंदिरों का निर्माण चालुक्य राजाओं के कार्यकाल में किया गया ।

पट्‌टदकल का मंदिर

९.५ पल्लव राजवंश

पल्लव राजसत्ता दक्षिण भारत की एक सशक्त राजसत्ता थी । तमिलनाडु की कांचीपुरम नगरी उनकी राजधानी

महाबलिपुरम का रथ मंदिर

थी । महेंद्र वर्मन एक पराक्रमी पल्लव राजा था । उसने पल्लव राज्य का विस्तार किया । वह स्वयं नाटककार था । महेंद्र वर्मन के बेटे नरसिंह वर्मन ने चालुक्य राजा पुलकेशिन (पुलकेशी) द्‌वितीय के आक्रमण को विफल कर दिया था । उसके कार्यकाल में महाबलिपुरम में प्रसिद्‌ध रथ मंदिरों की खुदाई की गई । ये रथ मंदिर अखंड पत्थर में खोदे गए हैं ।

पल्लव राजाओं की जलसेना शक्तिशाली और सुसज्ज थी । उनके कार्यकाल में भारत का दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ निकट के संबंध स्थापित हुए । देश का भीतरी और बाहरी व्यापार समृद्‌ध हुआ । युआन श्वांग कांची में आया था । उसने कहा है,''पल्लव राजाओं के राज्य में सभी धर्मों के लोगों के साथ सहिष्णुता और न्याय का व्यवहार किया जाता है ।''

९.६ राष्ट्रकूट राजवंश

राष्ट्रकूट राजवंश के संपन्न कालखंड में उनकी सत्ता विंध्य पर्वत से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैली हुई थी । दंतिदुर्ग राजा ने राष्ट्रकूटों की सत्ता पहले महाराष्ट्र में स्थापित की । राजा कृष्ण प्रथम ने वेरुल (एलोरा) के प्रख्यात कैलाश मंदिर की खुदाई करवाई ।

अब तक हमने मुख्य रूप से प्राचीन भारत की विभिन्न राजनीतिक सत्ताओं की जानकारी प्राप्त की । अगले पाठ में प्राचीन भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

वेरुल (एलोरा) की कैलास गुफा

क्या तुम जानते हो ?

पेरिप्लस ऑफ दी एरिथ्रियन सी :

पेरिप्लस का अर्थ जानकारी पुस्तिका है । एरिथ्रियन सी का अर्थ लाल सागर है । यूनानी लोगों के अनुसार हिंद महासागर और ईरान की खाड़ी लाल सागर के हिस्से थे । 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' का अर्थ 'लाल सागर की जानकारी पुस्तिका' है । यह पुस्तिका लगभग ई. स. प्रथम शताब्दी की है । इस पुस्तिका का लेखक एक नाविक है तथा वह इजिप्तवासी है । भारत का समुद्रीतट, ईरान की खाड़ी और इजिप्त के बीच चलने वाले व्यापार की जानकारी पेरिप्लस में मिलती है । बैरिगाजा से तात्पर्य भरूच, नाला-सोपारा, कल्याण, मुजिरीस (मुजिरिम) आदि भारतीय बंदरगाहों का उल्लेख पेरिप्लस में है । मुजिरीस (मुजिरिम) केरल के कोचीन के समीप स्थित प्राचीन बंदरगाह था । आज उसका अस्तित्व नहीं है ।

स्वाध्याय

१. **पहचानो तो ।**

(१) सातवाहन राजा अपने नाम से पहले किसका नाम लगाते थे...............

(२) प्राचीन समय में कोल्हापुर का नाम........

२. **पाठ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण करो और निम्न तालिका पूर्ण करो :**

पल्लव	कांची
----	ऐहोल, बदामी, पट्टदकल
सातवाहन	----

३. **निम्न राजसत्ताएँ और राजधानी का वर्गीकरण करो । सातवाहन, पांड्य, चालुक्य, वाकाटक, पल्लव, मदुरै, प्रतिष्ठान, कांचीपुरम, वातापि**

अ. क्र.	राजसत्ता	राजधानी
१.		
२.		
३.		
४.		

४. **पाठ में दिए गए किन्हीं तीन चित्रों का निरीक्षण करो और अपने शब्दों में लिखो कि तुम्हें क्या जानकारी प्राप्त होती है ।**

५. **निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :**

(१) दक्षिण की प्राचीन राजसत्ताएँ कौन-कौन-सी थीं ?

(२) मौर्य साम्राज्य का ह्रास होने के बाद किस प्रदेश के स्थानीय राजा स्वतंत्र बने ?

६. **संक्षेप में उत्तर लिखो :**

(१) महेंद्र वर्मन का कार्य लिखो ।

(२) 'त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन' का अर्थ क्या है ? स्पष्ट करो ।

(३) मुजिरीस (मुजिरिम) बंदरगाह से किन वस्तुओं का निर्यात होता था ?

उपक्रम :

पाठ में दिए गए चित्रों का संग्रह करके उनकी जानकारी प्राप्त करो और विद्यालय की प्रदर्शनी में रखो ।

* * *

१०. प्राचीन भारत : सांस्कृतिक

१०.१ भाषा और साहित्य

१०.२ जनजीवन

१०.३ विज्ञान

१०.४ शिक्षा के केंद्र

१०.५ स्थापत्य और कला

१०.१ भाषा और साहित्य

प्राचीन भारत में साहित्य लेखन की अखंड परंपरा थी । साहित्य का यह लेखन संस्कृत, अर्धमागधी, पाली और तमिल भाषाओं में हुआ । उनमें धार्मिक साहित्य, व्याकरण ग्रंथ, महाकाव्य, नाटक, कथासाहित्य जैसे बहुविध लेखन का समावेश है ।

संघम (संगम) साहित्य : संघम (संगम) का अर्थ विद्वान साहित्यकारों की सभाएँ होता है । इन सभाओं में संकलित साहित्य 'संघम (संगम) साहित्य' के रूप में परिचित है। यह साहित्य तमिल भाषा में सबसे प्राचीन साहित्य है । इस साहित्य में 'सिल्लपदिकारम' और 'मणिमेखलई' प्रसिद्ध महाकाव्य हैं । संघम (संगम) साहित्य के माध्यम से दक्षिण भारत के प्राचीन समय के राजनीतिक और सामाजिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है ।

धार्मिक साहित्य : इस साहित्य में आगम ग्रंथ, तिपिटक और भगवद्गीता महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं ।

'जैन आगम ग्रंथ' अर्धमागधी, शौरसेनी और माहाराष्ट्री जैसी प्राकृत भाषाओं में लिखे गए हैं । वर्धमान महावीर के उपदेश आगम ग्रंथों में एकत्रित किए गए हैं । अपभ्रंश भाषा में महापुराण, चरित्र, कथा आदि साहित्य पाया जाता है । सिद्धसेन दिवाकर ने न्यायशास्त्र से संबंधित 'सम्मइसुत्त' नामक ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखा । विमलसूरी ने 'पउमचरिय' नामक प्राकृत काव्य में रामकथा बताई है । हरिभद्रसूरी का 'समराइच्चकहा' और उद्योतनसूरी का 'कुवलयमालाकहा' ग्रंथ भी

क्या तुम जानते हो ?

उत्तर भारत से महाराष्ट्र तक के प्रदेशों में प्रचलित अधिकांश भाषाएँ प्राकृत तथा संस्कृत भाषाओं का विकसित रूप है । प्राकृत शब्द 'प्रकृत' शब्द से बना है । प्रकृत का अर्थ प्राकृतिक अथवा नैसर्गिक होता है । प्राकृत भाषाएँ लोगों के दैनिक व्यवहार में प्रचलित भाषाएँ थीं । प्राकृत भाषाओं का वर्गीकरण चार समूहों-पैशाची, शौरसेनी, मागधी और माहाराष्ट्री में किया जाता है । माहाराष्ट्री से मराठी भाषा विकसित हुई । इस प्रकार प्राकृत भाषाओं से मराठी जैसी आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ । विकास होने की इस प्रक्रिया में इन भाषाओं के मूल स्वरूप में परिवर्तन हुए । उन्हें 'अपभ्रंश भाषाएँ' कहा गया । अपभ्रंश भाषाओं में से आधुनिक भाषाएँ विकसित हुईं ।

विशेष प्रसिद्ध हैं ।

तिपिटक में तीन पिटक हैं । पिटक का अर्थ पेटी होता है । यहाँ उसका अर्थ 'विभाग' है । तिपिटक पाली भाषा में लिखे गए हैं । इसमें तीन अलग-अलग प्रकार के साहित्य समाविष्ट हैं ।

१. **'सुत्तपिटक' :** इसमें गौतम बुद्ध के उपदेश वचनों को एकत्रित किया गया है । इन वचनों को सूक्त कहते हैं । २. **'विनयपिटक' :** यहाँ 'विनय' शब्द का अर्थ 'नियम' है । इसमें बौद्ध संघ के भिक्खुओं और भिक्खुनियों को दैनिक जीवन में कैसा आचरण करना चाहिए; इसके नियम दिए गए हैं । ३. **'अभिधम्मपिटक' :** इसमें बौद्ध धर्म के दर्शन को समझाया गया है । तिपिटक की व्याख्या करनेवाला 'अट्ठकथा' (अर्थकथा) नामक ग्रंथ प्रसिद्ध है । विदुषियों ने अपने अनुभव बतानेवाली गाथाओं की रचना की है । उन गाथाओं को 'थेरीगाथा' नामक ग्रंथ में संकलित किया गया है । ये गाथाएँ पाली भाषा में हैं ।

हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ 'भगवद्गीता' महाभारत का ही एक अंग है । भगवद्गीता में कहा गया है–

'फल की आशा न करते हुए अपना–अपना कर्तव्य करें ।' इसमें यह भी बताया गया है कि ईश्वर की भक्ति का मार्ग सब के लिए मुक्त है ।

ई. स. की आठवीं शताब्दी में आद्य शंकराचार्य हुए । उन्होंने ज्ञान और वैराग्य जैसी बातों पर बल दिया । साथ ही 'उपनिषदों' 'ब्रह्मसूत्रों' और 'भगवद्गीता' ग्रंथों पर भाष्य लिखकर उनका अर्थ स्पष्ट किया । उन्होंने भारत की चार दिशाओं–बदरीनाथ, द्वारिका, जगन्नाथपुरी और शृंगेरी स्थानों पर चार मठों की स्थापना की ।

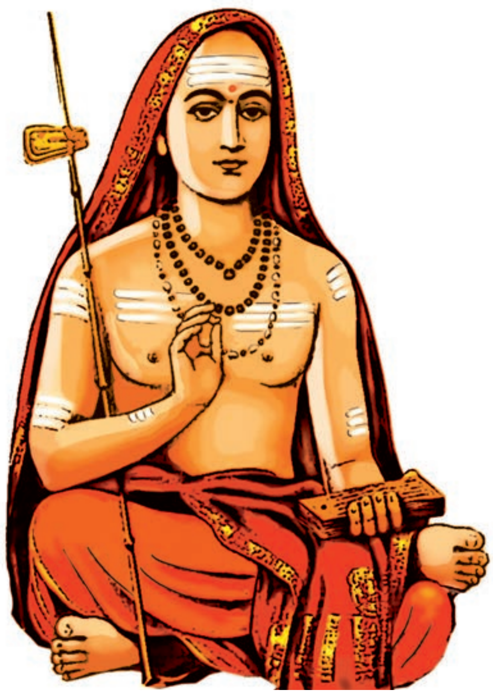

आद्य शंकराचार्य

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ग्रंथ लिखा । उत्तम शासन व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, इसका विस्तृत विचार विमर्श कौटिल्य ने इस ग्रंथ में किया है ।

व्याकरण ग्रंथ : व्याकरणाचार्य 'पाणिनि' द्वारा लिखित 'अष्टाध्यायी' नामक ग्रंथ संस्कृत व्याकरण का प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है । पतंजलि ने 'महाभाष्य' ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ में पाणिनि द्वारा लिखित 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में दिए गए सूत्रों का स्पष्टीकरण किया गया है ।

क्या तुम जानते हो ?

अर्थशास्त्र : कौटिल्य ने अर्थशास्त्र ग्रंथ लिखा है । इस ग्रंथ में राजा के कर्तव्य, मंत्रियों को चुनने के निकष, प्रतिरक्षा प्रबंध, दुर्गों के प्रकार, सेना की संरचना, गुप्तचरों की योजना, कोष, कार्यालय की व्यवस्था, न्यायदान प्रणाली, चोरी की जाँच–पड़ताल करना, दंड के प्रकार आदि प्रशासन से संबंधित बिंदुओं पर सूक्ष्मता से विचार–विमर्श किया गया है ।

आर्ष और अभिजात महाकाव्य :

प्राचीन भारत के 'रामायण' और 'महाभारत' दो आर्ष महाकाव्य हैं । आर्ष का अर्थ ऋषियों द्वारा रची गई रचना है । 'रामायण' महाकाव्य वाल्मीकि द्वारा रचा गया है । रामायण की कथा के नायक श्रीराम हैं । 'महाभारत' महाकाव्य व्यास ऋषि द्वारा रचा गया है । कौरव और पांडव के बीच का युद्ध महाभारत का विषय है । इस महाकाव्य में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन मिलता है । महाभारत में विभिन्न मानवीय भाव–भावनाओं और उनके परिणामों के व्यापक दर्शन होते हैं ।

भाषा, साहित्य और कला की परंपरा में कोई कालखंड ऐसा भी होता है कि भविष्य में भी उसकी गरिमा और गौरव अबाधित रहते हैं । ऐसे कालखंड में निर्मित साहित्य, कला आदि को अभिजात साहित्य के रूप में जाना जाता है । अभिजात संस्कृत भाषा में कालिदास द्वारा रचित 'रघुवंश' और 'कुमारसंभव', भारवि द्वारा रचित 'किरातार्जुनीय' और माघ द्वारा रचित 'शिशुपालवध' प्राचीन कालखंड के ये महाकाव्य विख्यात हैं ।

नाटक : गायन, वादन और नृत्य के माध्यम से किसी कथा को प्रस्तुत करने की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है । इन कलाओं की विस्तृत चर्चा भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में की है । संवादों के माध्यम से की जानेवाली इन कलाओं की प्रस्तुति को 'नाटक' कहते हैं । प्राचीन

संस्कृत नाटकों में भास नाटककार का लिखा 'स्वप्नवासवदत्त', कालिदास का लिखा 'अभिज्ञानशाकुंतल' जैसे अनेक नाटक विख्यात हैं ।

कथा साहित्य : प्राचीन समय में भारत में कथा साहित्य का उपयोग मनोरंजन द्‌वारा शिक्षा प्रदान करने के लिए किया जाता था । 'पैशाची' नामक भाषा में गुणाढ्‌य का लिखा 'बृहत्कथा' ग्रंथ प्रसिद्‌ध है । विष्णु शर्मा नाम के विद्‌वान द्‌वारा रचित 'पंचतंत्र' ग्रंथ कथासाहित्य का उत्कृष्ट नमूना है । इस ग्रंथ का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है । बौद्‌ध जातक कथाएँ भी विख्यात हैं ।

करके देखो ।

पंचतंत्र की कोई कहानी प्राप्त करो और उसका नाट्‌यीकरण करो ।

१०.२ जनजीवन

प्राचीन भारत के साहित्य द्‌वारा तत्कालीन जनजीवन की जानकारी प्राप्त होती है । प्राचीन भारत में देशांतर्गत और सुदूर देशों के साथ चलनेवाले व्यापार के कारण संपन्नता और समृद्‌धि का निवास था । समाज विभिन्न जातियों में बँटा हुआ था । विभिन्न कारीगरों और व्यापारियों के संगठन थे । उन्हें 'श्रेणी' कहते थे । व्यापार जलमार्ग और सड़क मार्ग से चलता था । मलमल के वस्त्र, हाथी दाँत, मूल्यवान रत्न, मसाले के पदार्थ, उत्कृष्ट बनावटवाले मिट्‌टी के बरतन आदि भारतीय वस्तुओं को विदेश में बड़ी माँग थी । चावल, गेहूँ, जौ, मसूर प्रमुख फसलें थीं । लोगों के भोजन में इन अनाजों से बने विभिन्न पदार्थ, मांस-मछली, दूध, घी और फलों का समावेश रहता था । लोग मुख्य रूप से सूती वस्त्रों का उपयोग करते थे । साथ ही रेशमी और ऊन के वस्त्र भी उपयोग में लाते थे । वे वस्त्र लगभग आज के वस्त्रों जैसे-धोती, उत्तरीय वस्त्र, साफा, साड़ी के समान थे । कुषाणों के कार्यकाल में वस्त्र सिलने की पद्‌धति से भारतीयों का परिचय हुआ ।

१०.३ विज्ञान

चिकित्सा विज्ञान : भारतीय वैद्‌यकशास्त्र को 'आयुर्वेद' कहा जाता है । आयुर्वेद की लंबी परंपरा रही है । आयुर्वेद में रोगों के लक्षण, रोगों का निदान, रोगों पर किया जानेवाला उपचार जैसी बातों का विचार किया गया है । साथ ही रोग न हों; इसके लिए क्या करना चाहिए; इसका भी विचार किया गया है । बिंबिसार के दरबार में 'जीवक' नाम का विख्यात वैद्‌य था । 'चरकसंहिता' ग्रंथ में चिकित्सा विज्ञान तथा औषधिविज्ञान की विस्तृत जानकारी दी गई है । यह ग्रंथ 'चरक' ने लिखा है । शल्यविशारद सुश्रुत द्‌वारा लिखित 'सुश्रुतसंहिता' ग्रंथ में विभिन्न रोगों का निदान और उपचारों की जानकारी प्राप्त है । इस ग्रंथ की विशेष बात यह है कि इसमें विविध कारणों से लगनेवाले घाव, हड्‌डियों का टूटना, उनके प्रकार और उनपर की जानेवाली शल्यक्रियाओं (ऑपरेशन) के प्रकारों पर विचार-विमर्श किया गया है । सुश्रुत संहिता का अरबी भाषा में अनुवाद हुआ था । उसका नाम 'किताब-ए-सुसुद' था । वाग्भट ने वैद्‌यकशास्त्र पर अनेक ग्रंथ लिखे । उनमें 'अष्टांगसंग्रह' और 'अष्टांगहृदयसंहिता' प्रमुख ग्रंथ हैं । बौद्‌ध भिक्खु सिद्‌ध नागार्जुन द्‌वारा लिखित 'रसरत्नाकर' ग्रंथ में रसायनों एवं धातुओं के विषय में जानकारी मिलती है ।

गणित और खगोल विज्ञान : प्राचीन भारतीयों ने गणित और खगोल विज्ञान विषयों का गहन अध्ययन किया था । १ से ९ और '०' (शून्य) संख्याओं का उपयोग सब से पहले भारतीयों ने किया । इन अंकों का मूल्य एकम, दहाई के स्थानानुसार बदलता है; यह प्राचीन भारतीयों को मालूम था । आर्यभट नामक वैज्ञानिक ने 'आर्यभटीय' ग्रंथ लिखा था । उसने गणितीय क्रियाओं के अनेक सूत्र दिए । आर्यभट खगोल विज्ञानी भी था । उसने कहा, पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमण करती है । ई. स. छठी शताब्दी में वराहमिहिर ने 'पंचसिद्‌धांतिका' नामक ग्रंथ लिखा । उसमें भारतीय खगोल विज्ञान के सिद्‌धांतों के साथ-

साथ यूनानी, रोमन और इजिप्यशियन संस्कृतियों में पाए जानेवाले खगोल विज्ञान के सिद्धांतों का विचार भी किया गया है । ई. स. सातवीं शताब्दी में हुए गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त के लिखे ग्रंथ का अरबी भाषा में अनुवाद किया गया ।

क्या तुम जानते हो ?

कणाद : कणाद ने ''वैशेषिक दर्शन' नाम का ग्रंथ लिखा । इस ग्रंथ में प्रमुखता से 'अणु-परमाणु का विचार किया गया है । कणाद के विचारानुसार यह विश्व असंख्य वस्तुओं से भरा हुआ है । इन वस्तुओं से तात्पर्य अणु द्वारा धारण किए हुए विभिन्न रूप हैं । ये रूप बदलते जाते हैं परंतु अणु अक्षय रहते हैं ।

१०.४ शिक्षा के केंद्र : प्राचीन भारत में शिक्षा के बहुतायत ख्यातिप्राप्त केंद्र थे । वहाँ शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों से भी छात्र आते थे ।

तक्षशिला विश्वविद्यालय : तक्षशिला प्राचीन भारत के व्यापारिक मार्ग पर महत्त्वपूर्ण स्थान था । यह स्थान अब वर्तमान पाकिस्तान में है । वहाँ पाए गए पुरातत्त्वीय प्रमाण के आधार पर दिखाई देता है कि तक्षशिला नगरी ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बसाई गई थी । गौतम बुद्ध के समकालीन जीवक नाम के वैद्य ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी।ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में तक्षशिला विश्वविद्यालय की कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी । मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य की शिक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में हुई थी । व्याकरणाचार्य पाणिनि, वैद्य चरक भी तक्षशिला विश्वविद्यालय के ही विद्यार्थी थे । सिकंदर के साथ आए हुए यूनानी इतिहासकारों ने भी तक्षशिला का उल्लेख किया है । उन्होंने लिखा है कि यूनान में कहीं भी ऐसा विश्वविद्यालय नहीं है । चीनी बौद्ध भिक्खु फाहियान लगभग ई. स. ४०० में भारत में आया था । उस समय वह तक्षशिला विश्वविद्यालय भी गया था । इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, बौद्ध दर्शन, अर्थशास्त्र, तर्कशास्त्र आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी ।

वाराणसी : वरणा और असि नदियाँ गंगा की सहायक नदियाँ हैं । इन दो नदियों के बीच बसे हुए शहर को वाराणसी नाम प्राप्त हुआ । प्राचीन समय से वेदों तथा जैन और बौद्ध दर्शनों की शिक्षा प्रदान करनेवाले केंद्र वाराणसी में थे ।

वलभी : गुजरात के सौराष्ट्र में वलभी नामक प्राचीन नगर था । ई. स. पाँचवीं से आठवीं शताब्दी में वह जैन और बौद्ध दर्शन का महत्त्वपूर्ण शिक्षा केंद्र था। युआन श्वांग और इत्सिंग नामक चीनी बौद्ध भिक्खु वलभी में आए थे ।

नालंदा विश्वविद्यालय : वर्तमान बिहार के पटना शहर के निकट प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष हैं । इस विश्वविद्यालय को हर्षवर्धन ने उदारमना से दान किया था । युआन श्वांग और इत्सिंग ने इस विश्वविद्यालय का वर्णन किया था । उस वर्णन के अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय में हजारों विद्यार्थियों के रहने की सुविधा थी । विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में हजारों ग्रंथ थे । यहाँ प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थियों को प्रवेशद्वार पर परीक्षा देनी पड़ती थी ।

नालंदा महाविहार की मुद्रा

विक्रमशीला विश्वविद्‌यालय : वर्तमान बिहार के भागलपुर के निकट विक्रमशीला विश्वविद्‌यालय था । ई. स. आठवीं शताब्दी में धर्मपाल नामक राजा ने इसकी स्थापना की । वहाँ छह विहार थे । प्रत्येक विहार का स्वतंत्र प्रवेश द्‌वार था ।

कांची : पल्लव राजसत्ता के समय में (ई. स. छठी शताब्दी) वर्तमान तमिलनाडु में कांची शहर शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केंद्र था । वहाँ वैदिक और बौद्‌ध ग्रंथों का अध्ययन और अध्यापन किया जाता था ।

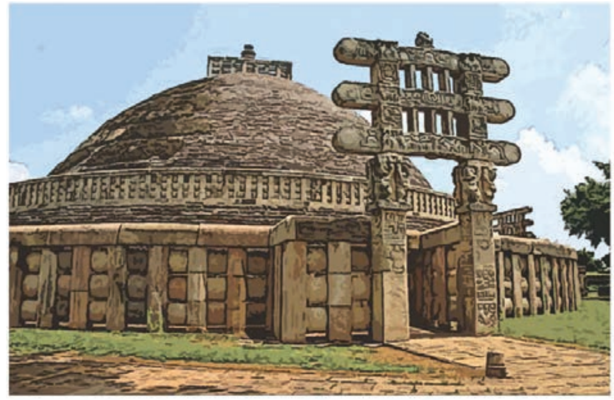

सांची स्तूप

१०.५ स्थापत्य और कला

मौर्य और गुप्त के कार्यकाल में भारतीय स्थापत्यकला का विकास चरमसीमा पर था । सम्राट अशोक द्‌वारा विभिन्न स्थानों पर निर्मित पाषाण (पत्थर) के स्तंभ भारतीय शिल्पकला के उत्तम उदाहरण हैं । सांची के स्तूप तथा कार्ले, नाशिक, अजिंठा (अजंता), वेरुल (एलोरा) आदि स्थानों पर निर्मित गुफाओं के माध्यम से वही परंपरा अधिकाधिक विकसित होती गई ; यह दिखाई देता है । गुप्त कार्यकाल में भारतीय मूर्तिकला का विकास हुआ । दक्षिण भारत में चालुक्य और पल्लव राजसत्ताओं के कालखंड में मंदिर स्थापत्य का विकास हुआ । इसके प्रमाण महाबलिपुरम के मंदिर हैं । पल्लव राजसत्ता के कालखंड में कांस्य धातु से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाना प्रारंभ हुआ । दिल्ली के समीप महरौली में गुप्तकालीन लौहस्तंभ के आधार पर प्राचीन भारतीयों का धातुविज्ञान विषयक ज्ञान कितना उन्नत था; इसका बोध होता है ।

हमने देखा कि प्राचीन भारतीय संस्कृति अत्यंत समृद्‌ध एवं उन्नत थी । अगले पाठ में हम भारतीय संस्कृति और विश्व की अन्य संस्कृतियों के बीच हुए संपर्क तथा उसके दूरगामी परिणामों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

नटराज की कांस्यमूर्ति

महरौली का लौहस्तंभ

स्वाध्याय

१. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों की सूची बनाओ ।

(२) प्राचीन भारत की किन-किन वस्तुओं की विदेशों में माँग थी; उनकी सूची बनाओ ।

२. नाम लिखो :

प्राचीन भारत के महाकाव्य ....

३. (अ) रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(१) रामायण महाकाव्य .... ऋषि द्‌वारा रचा गया है ।

(२) भारतीय वैद्‌यक शास्त्र को .... कहते हैं ।

(३) हजारों विद्‌यार्थियों के रहने की सुविधा .... विश्वविद्‌यालय में थी ।

(ब) संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) तिपिटक किसे कहते हैं; स्पष्ट करो ।

(२) भगवद्‌गीता में क्या संदेश दिया है ?

(३) आयुर्वेद में किन-किन बातों पर विचार किया गया है ?

(४) संघम (संगम) साहित्य किसे कहते हैं ?

४. विचार-विमर्श करो :

मौर्य और गुप्त कालखंड में स्थापत्य और कला ।

५. तुम क्या करोगे ?

(१) आयुर्वेदिक उपचारों के विषय में जानकारी प्राप्त करके तुम अपने दैनिक जीवन में उसका किस प्रकार उपयोग करोगे ?

(२) अपनी पाठ्‌यपुस्तक में सांची स्तूप का निरीक्षण करो और उस विषय में घर के लोगों से जानकारी प्राप्त करो ।

६. निम्न प्रसंग में तुम क्या करोगे?

तुम सैर पर गए हो । वहाँ के ऐतिहासिक स्मारक पर तुम्हारा मित्र अपना नाम लिख रहा है ।

उपक्रम :

(१) अपने परिसर में कौन-कौन-से विशेष वास्तु/भवन पाए जाते हैं; इस विषय में घर के लोगों से जानकारी प्राप्त करो ।

(२) अपने समीप के क्षेत्र/परिसर में पाए जानेवाले स्मारकों, भवनों की सैर पर जाओ तथा लिखो कि उनके द्‌वारा कौन-सा इतिहास तुम्हें मालूम होता है ।

* * *

नाशिक की गुफा

११. प्राचीन भारत और विश्व

११.१ भारत और पश्चिमी देश ।

११.२ भारत और एशिया महाद्‌वीप के अन्य देश

११.१ भारत और पश्चिमी देश

हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध प्रस्थापित किए थे । तभी से भारत का बाहरी विश्व से आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रारंभ हुआ था । बौद्‌ध धर्म का प्रचार-प्रसार अफगानिस्तान और मध्य एशिया के अनेक देशों में हुआ था । ईरानी साम्राज्य के कालखंड में भी भारत का पश्चिमी विश्व से संपर्क बढ़ने लगा । उस समय के यूनानी इतिहासकारों की भारत के प्रति जिज्ञासा बढ़ गई थी । भारत के विषय में उन्होंने जो लेखन किया; उसके द्‌वारा पश्चिमी देशों को भारत का परिचय हुआ । कालांतर में जिस मार्ग से सिकंदर भारत आया; वे मार्ग भारत और पश्चिमी देशों के व्यापार के लिए खुल गए । कुषाणों के कार्यकाल में ग्रीक मूर्तिकला के प्रभाव से भारत में एक नई कलाशैली का उदय हुआ । उसे गांधार शैली कहते हैं । गांधार शैली में मुख्य रूप से गौतम बुद्‌ध की मूर्तियाँ गढ़ी गईं । ये मूर्तियाँ प्रमुखत: अफगानिस्तान के गांधार प्रदेश में पाई गईं। अत: इस शैली को 'गांधार शैली' कहते हैं । इस शैली की मूर्तियों के चेहरों के आकार-प्रकार यूनानी चेहरों से मिलते-जुलते हैं । भारत में प्रारंभिक सिक्के भी यूनानी सिक्कों के आधार पर ढाले गए थे ।

पेरिस के संग्रहायल में गौतमबुद्‌ध की प्रतिमा – गांधार शैली

ई. स. पहली-दूसरी शताब्दी के कालखंड में

अफगानिस्तान के हड्डा में स्तूप पर गांधार शैली का शिल्प । यूनानी लोगों की वेशभूषा, एंफोरा (एक प्रकार का कुंभ) और वाद्‌य

भारत और रोम के बीच का व्यापार समृद्‌ध हुआ था । इस व्यापार में दक्षिण भारत के बंदरगाहों का बहुत बड़ा योगदान था । महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुए उत्खनन में कांस्य धातु से बनी कुछ वस्तुएँ पाई गईं । वे वस्तुएँ रोमन बनावट की हैं। तमिलनाडु के अरिकामेडु नामक स्थान पर हुए उत्खनन में भी रोमन

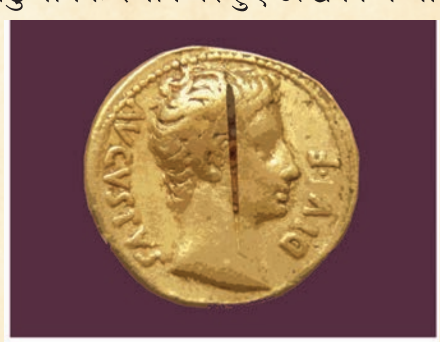

अरिकामेडु में पाया गया रोमन सम्राट ऑगस्टस का सोने का सिक्का

बनावट की अनेक वस्तुएँ पाई गईं । ये दोनों स्थान भारत और रोम के बीच महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे । तत्कालीन साहित्य में ऐसे अनेक व्यापारिक

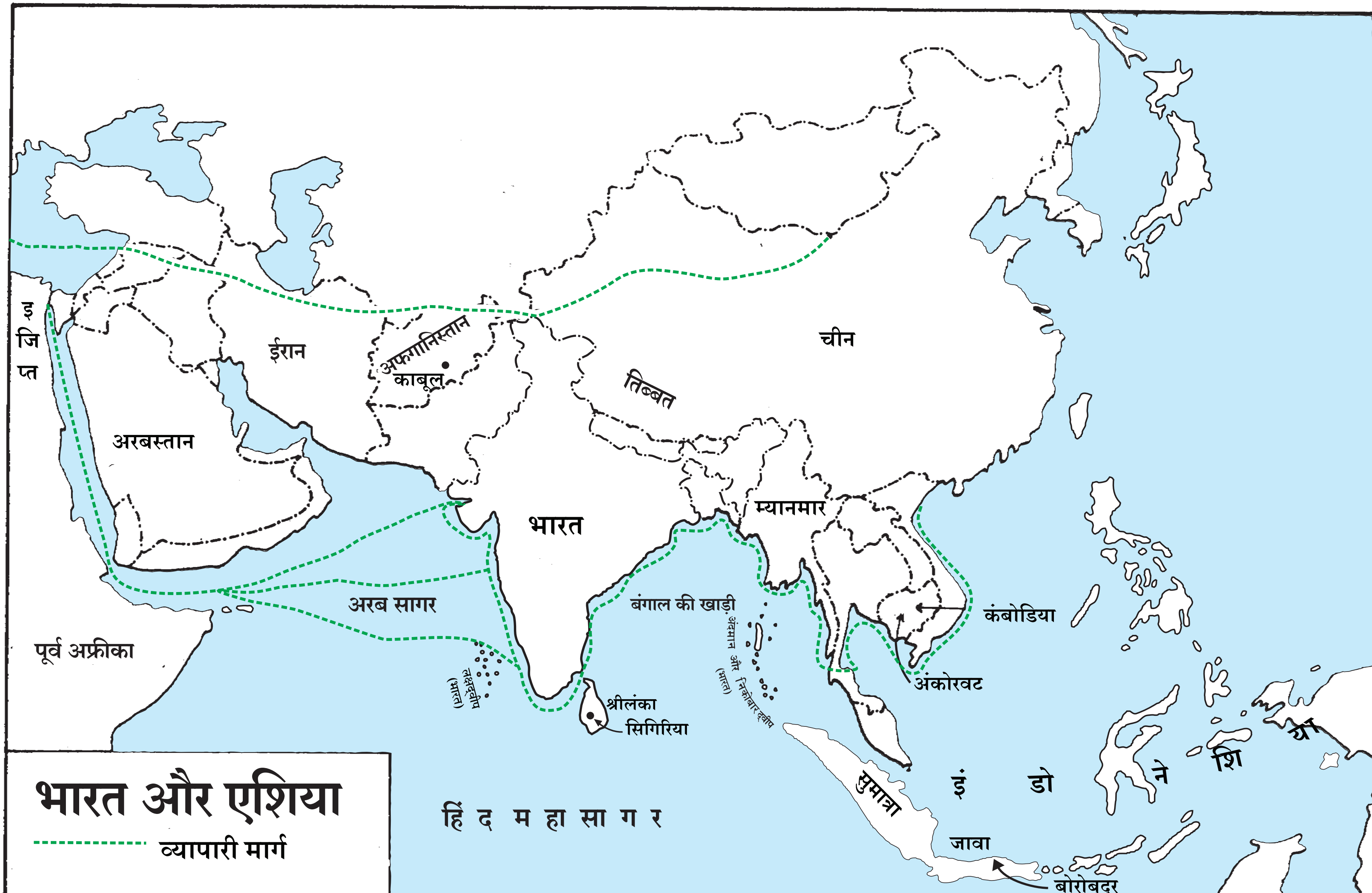
भारत और एशिया
व्यापारी मार्ग
इजिप्त
अरबस्तान
ईरान
अफगानिस्तान
काबूल
तिब्बत
चीन
भारत
म्यानमार
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
अंदमान और निकोबार द्वीप (भारत)
लक्षद्वीप (भारत)
श्रीलंका
सिगिरिया
कंबोडिया
अंकोरवट
सुमात्रा
जावा
बोरोबुदूर
इंडोनेशिया
पूर्व अफ्रीका
हिंद महासागर

केंद्रों का उल्लेख प्राप्त होता है । इस व्यापार में इजिप्त के अलेक्जांड्रिया नामक बंदरगाह का बहुत बड़ा महत्व था । अरब व्यापारी भारतीय माल को अलेक्जांड्रिया तक ले जाते थे । वहाँ से वह माल यूरोप के देशों में भेजा जाता था । अरब लोगों ने भारतीय वस्तुओं के साथ भारतीय दर्शन और विज्ञान को भी यूरोप तक पहुँचाया । गणित की 'शून्य' संकल्पना भारत का विश्व को दिया हुआ एक वरदान ही है । अरब लोगों ने इस संकल्पना का परिचय पश्चिमी यूरोप से कराया ।

११.२ भारत और एशिया महाद्वीप के अन्य देश

एशिया के अनेक देशों पर प्राचीन भारतीय संस्कृति का विशेष रूप से प्रभाव पड़ा ।

श्रीलंका : बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेंद्र तथा अपनी बेटी

सिगिरिया गुफाओं में भित्तिचित्र

संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था । इन दोनों के नामों का उल्लेख श्रीलंका के बौद्ध ग्रंथ 'महावंस' में मिलता है । संघमित्रा अपने साथ बोधिवृक्ष की टहनी ले गई थी । श्रीलंका के अनुराधपुर में बोधिवृक्षँ है और वहाँ की परंपरा के अनुसार यह माना जाता है कि वह बोधिवृक्ष इसी टहनी से बड़ा हुआ है ।

श्रीलंका के मोती तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं की भारत में बड़ी मात्रा में माँग थी । वहाँ के सिगिरिया नामक स्थान पर ईसा पाँचवीं शताब्दी में कश्यप राजा ने गुफाएँ खुदवाई थीं । उन गुफाओं के भित्तिचित्रों की शैली अजिंठा की चित्रशैली के साथ साम्य दर्शाती है । श्रीलंका के 'महावंस' और 'दीपवंस' ग्रंथ भारत और श्रीलंका के बीच के पारस्परिक संबंधों की जानकारी देते हैं । ये ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए हैं ।

चीन और अन्य देश : प्राचीन समय से भारत और चीन के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध प्रस्थापित हुए थे । सम्राट हर्षवर्धन ने चीन के दरबार में अपना राजदूत भेजा था । चीन में तैयार होनेवाले रेशमी वस्त्र को भारत में 'चीनांशुक' कहते थे । भारत में चीनांशुक की बड़ी माँग थी । प्राचीन भारत के व्यापारी यह चीनांशुक पश्चिमी देशों में भेजते थे । यह व्यापार सड़क मार्ग से होता है । इस मार्ग को 'रेशम मार्ग' भी कहते हैं । भारत के कुछ प्राचीन स्थान इस रेशम मार्ग से जोड़े गए थे । उनमें महाराष्ट्र के मुंबई समीप का नाला-सोपारा एक स्थान था । भारत में बौद्ध भिक्खु फाहियान और युआन श्वांग भी रेशम मार्ग से ही आए थे ।

ई. स. प्रथम शताब्दी का चीनी सम्राट 'मिंग' के आमंत्रण पर बौद्ध भिक्खु धर्मरक्षक और कश्यपमातंग चीन गए थे । उन्होंने अनेक भारतीय बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया । उसके पश्चात चीन में बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु प्रोत्साहन मिला । बौद्ध धर्म जापान, कोरिया और विएतनाम देशों में भी पहुँचा ।

दक्षिण- पूर्व एशिया के देश : कंबोडिया देश के प्राचीन राज्य 'फुनान' की स्थापना ई. स. प्रथम शताब्दी में हुई । चीनी परंपरा के आधार पर यह जानकारी प्राप्त होती है कि फुनान की स्थापना कौंडिण्य नामक भारतीय ने की । फुनान के निवासियों को

संस्कृत भाषा का ज्ञान था। उस कालखंड का एक उकेरा हुआ शिलालेख उपलब्ध है । यह शिलालेख संस्कृत में है । दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों में भी भारतीय वंश के लोगों के छोटे राज्य उदित हुए थे । इन राज्यों के कारण भारतीय संस्कृति का प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया में होता रहा ।

दक्षिण-पूर्व एशिया की कला और उसके सांस्कृतिक जीवन पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है । इंडोनेशिया में आज भी रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित नृत्य एवं नाट्य लोकप्रिय हैं । दक्षिण-पूर्व एशियाई राज्यों में भारतीय संस्कृति का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता गया । प्राचीन समय में बौद्‌ध धर्म म्यानमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों में पहुँच गया । कालांतर में शिव और विष्णु के मंदिरों का भी निर्माण हुआ ।

इस वर्ष हमने ईसा पूर्व ३००० से ई. स. आठवीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त की । अगले वर्ष हम ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक के इतिहास का अध्ययन करेंगे । ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के कालखंड के इतिहास को 'मध्ययुगीन इतिहास' कहते हैं ।

स्वाध्याय

१. पहचानो तो ।

(१) वह स्थान; जहाँ रोमन बनावट की वस्तुएँ पाई गईं।

(२) कुषाण कार्यकाल में भारत में एक नई कलाशैली का उदय हुआ; वह शैली ।

(३) महावंस और दीपवंस ग्रंथों की भाषा

(४) प्राचीन समय के वे देश; जहाँ बौद्‌ध धर्म का प्रसार हुआ ।

२. विचार करो और लिखो :

(१) दक्षिण-पूर्व एशिया पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है ।

(२) चीन में बौद्‌ध धर्म के प्रसार हेतु प्रोत्साहन मिला ।

३. तुम क्या करोगे ?

तुम्हारी पसंद की रुचि को प्रोत्साहन मिला तो तुम क्या करोगे ?

४. चित्र वर्णन करो :

हमारे पाठ में दिए गए अफगानिस्तान के हड्‌डा में स्तूप पर अंकित गांधार शैली के शिल्पों का निरीक्षण करो और चित्र वर्णन करो ।

५. अधिक जानकारी प्राप्त करो :

(१) गांधार शैली (२) रेशम मार्ग

६. पाठ में उल्लिखित दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों को मानचित्र प्रारूप में दर्शाओ ।

उपक्रम :

जो कला तुम्हें अच्छी लगी होगी; उस कला के विषय में जानकारी प्राप्त करो और उसको कक्षा में प्रस्तुत करो ।

* * *